प्रेम पत्र

प्रधानमंत्री महोदय मोरारजी भाई जी

नमस्ते।

आप से मुलाकात किये बहुत दिन हो गये। सोच रहा था कि आपसे मिलने आऊँ। पर आपसे मिलने आने वालों का अन्त देखकर हिम्मत न पड़ी। आपने बेचारे चौधरी साहब के साथ बड़ा बेरुखी का सलूक किया। इसे कहते हैं घर बुलाके इज्जत उतारना। मैं तो इसीलिये नहीं आया क्योंकि मैं तो बहुत गैरतमन्द इन्सान हूँ। मुझ से ऐसी बेइज्जती बर्दाश्त नहीं हो सकती। अगर मेरे साथ कहीं आप ऐसा सलूक कर बैठते तो या तो मैं आपकी कुर्सी पर खुद आ बैठता या चुल्लू भर पानी में जा डूब मरता। बेचारे चौधरी साहेब तो अपना सा मुँह ले के वापस चले आये। अब तक तो सिवाय रूठी बन्दरिया जैसे नखरों के उनका मुँह तक भी नहीं खुला। हां बस उनका जम्हूरा आपसे त्याग-पत्र जरुर मांग रहा है। जो आप दम रहते तो देंगे नहीं क्योंकि आपको त्याग-पत्र लेने की आदत है, देने की नहीं।

शामत तो है बेचारी इन्दिरा गांधी की, जैसे पाकिस्तानी हुक्मरान अपनी गद्दी जाते देख काश्मीर में जिहाद की दुहाई देने लगते हैं। वैसे ही हिन्दुस्तान के जनता पार्टी के हुक्मरानों के पास भी इन्दिरा गांधी के नाम की गोली मेरे जैसे शरीफ बच्चों को चूसने के लिए तैयार है।

लेकिन जनता पार्टी के आका ये गोली आप जनता पार्टी के मेम्बरों को ही चूसने को दे सकते हैं क्योंकि देश की जनता जब ब्रिटिश राज्य से लेकर आज तक बन्दूक की गोलियों से नहीं डरी तो इन चूसने वाली गोलियों की क्या औकात है? इनको तो मेहरबानी करके आप अपनी बोतल में ही डाल दें। शायद आपके मुँह का जायका रोज कुछ बदल जाये। हमें तो बस अब माफ ही करें क्योंकि हमें देश के बहुत से काम करने हैं। हमारे पास इन गोलियों को चूसने का समय नहीं है।

आपका
चिल्ली

मुख्य पृष्ठ पर

नहीं करता याद कोई
बीता साल पुराना,
बीते साल को जोर से
सीखो लात लगाना।
सीखो लात लगाना
नये की करो इन्तजार,
प्यार से उसको पालो पोसो
बाद में देना धक्का मार॥
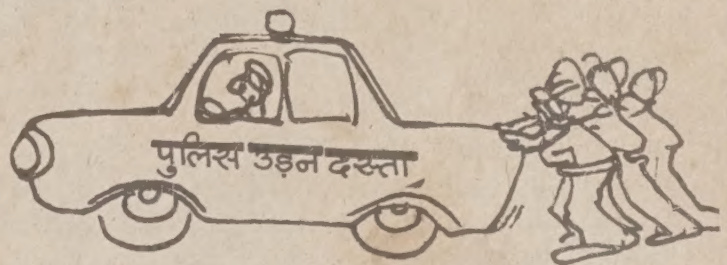
अंक : ४९, १४ दिसम्बर से २० दिसम्बर १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

वेद प्रकाश 'वेद', तिनसुकिया (आसाम)

प्र० : आपकी भूतपूर्व प्रेमिका अब आपकी ख्याति देखकर क्या सोचती होगी ?

उ० : 'कारतूस' जब पढ़े तो, मन ही मन पछताय,
इनकी क्यों नहिं हुई मैं, हाय विधाता हाय ।

विकी सहानी, इंदौर (म० प्र०)

प्र० : आजकल जनता, इस सरकार से भी असन्तुष्ट है, फिर इसको वोट क्यों दिये थे ?

उ० : 'काका' सत्तर वर्ष तक, देखा आंख पसार,
जनता मन भाई नहीं, कोई भी सरकार ।

विजय कुमार शर्मा, बीकानेर

प्र० : प्रेमिका अपने प्रेमी के प्रेम पत्र तो ले लेती है लेकिन जवाब क्यों नहीं देती ?

उ० : शादी होवे तब तलक, ठहरो शर्मा साब,
मिलें सभी लैटर्स के, एकहि साथ जवाब ।

गणेश सावत, कामठी (नागपुर)

प्र० : अगर लड़ाकू घरवाली रूठकर भाग जाये तो ?

उ० : आये ऐसी शुभ घड़ी, दो ईश्वर को दाद,
सवा रुपये का उसी दिन, बांट देउ परसाद ।

महेश कुमार, सीवान (सागर)

प्र० : एक बार काका काकी दोनों का फोटो एक साथ दीवाना में छप जाये तो ?

उ० : दीवाने सब चकित हों, निर्णय नहिं कर पांय,
काका-काकी दोउ खड़े, काके लागूं पांय ।

सुशील अकेला, खगड़िया

प्र० : विश्वास की अर्थी कब निकलती है ?

उ० : अर्थी जल्दी उठेगी, मन में रक्खो आस,
सांस ले रहा आखरी, जनगण का विश्वास ।

अ[illegible]कुमार चन्द्र, डोंगर गांव

प्र० : इन्सान, हैवान का रूप कब धारण कर लेता है ?

उ० : अक्ल और ईमान का, हो जाता जब ह्रास,
तब इन्सा बनकर गधा, चरने लगता घास ।

देशराज नागपाल, रुद्रपुर (नैनीताल)

प्र० : प्रेम, विश्वास और श्रद्धा में से कौन बड़ा है ?

उ० : तीनों के द्वारा चले, मौज मजे से घर्र,
जैसे थ्रीव्हीलर चले, स्कूटर फर्र फर्र ।

दीपक भुटानी, करनाल (हरियाणा)

प्र० : काका जी, अगले चुनाव में आप किस पार्टी को वोट

उ० : इस शासन का कुछ दिनों, लेने दीजे स्वाद,
निर्णय अपना देंय हम, तीन वर्ष के बाद ।

लाल बहादुर प्रधान, दुलिया जान (डिब्रूगढ़)

प्र० : क्या इस जन्म का अधूरा छूटा हुआ प्रेम अगले पूरा हो सकता है ? कोई उदाहरण ।

उ० : यदि तुम बछड़ा बन सको, तो चाटेगी गाय,
पूर्व जन्म के प्यार का, उदाहरण मिल जाय ।

सुभाष चन्द्र सैनी, सिरसा (हिसार)

प्र० : प्यार की शुरूआत कैसे की जाये काका ?

उ० : वह मटकाये सैन जब, तुम फड़काओ नैन,
शुरूआत हो जायगी, प्यार करो दिन-रैन ।

मनोहर लाल साधूराम, अहमदाबाद

प्र० : रामचन्द्र जी ने धनुष तोड़कर सीता जी से शादी आज का युवक क्या तोड़ कर शादी करता है ।

उ० : आज युवक स्वच्छंद है, नहिं करता परवाह,
फादर का दिल तोड़ कर, करता प्रेम विवाह ।

रशीद हुसैन अर्शी, स्योहारा (बिजनौर)

प्र० : जब कभी लब पर तेरे, आये मेरा नाम,
तभी फरिश्ते मुझ तलक पहुंचा दें पैगाम ।

उ० : झूठी आशा छोड़ दें, वरना धोखा खायं,
अगर फरिश्ते आयं तो, तुमको भी ले जायं ।
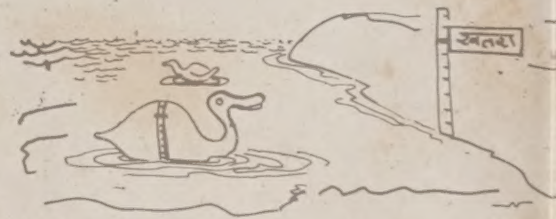
राजकुमार पंजवानी, बिलासपुर

प्र० : बच्चों के अन्दर भगवान होते हैं तो जवान और अन्दर ?

उ० : बच्चों में भगवान हैं, युवको में आक्रोश,
बूढ़े मन कुर्सी बसे, किसको देवें दोष ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतूस
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
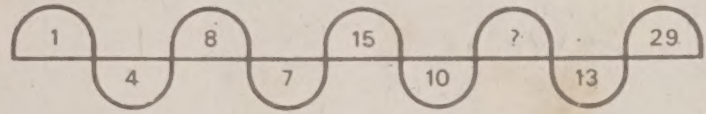
कलाकार परिचय

देव मुखर्जी—प्रटाप
नीता मेहता—पैनी
गीता बहल—फीता
विजय आनन्द—सुंअर
आशा पारिख—कुर्सी
नूतन—संजोगिता
विनोद खन्ना—अचय

मैं कुरसी तेरे आंगन की

यह कहानी पुराने जमींदारों के जमाने की है, जब जमींदार लोग सुरा-सुन्दरी में डूबे रहते थे। बेचारों को मजबूरी में शराब पीनी पड़ती थी क्योंकि उन दिनों कोका कोला का रिवाज नहीं चला था और थम्स अप, कैम्पा कोला, डबल सैवन सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी फाइलों में बन्द पड़े थे जमींदार लोग घर में बीबी के अलावा बाहर एक रखैल भी रखा करते थे क्योंकि गृहस्थ जीवन के बारे में ऋषि मुनी सब मानते हैं कि यह एक गाड़ी की तरह है। जनमत में सबके पास गाड़ी नहीं होती। अतः गृहस्थ जीवन को स्कूटर मान लीजिये—स्कूटर में एक फालतू पहिया स्टेपनी होती है। रखैल को भी स्कूटर रूपी गृहस्थी जीवन की स्टैपनी समझिये। ऐसे ही एक जमींदार के बेटे थे जिन्हें लोग सुंअर कह कर पुकारते थे। उनका कुर्सी नाम की एक वैश्या से प्रेम हो गया। वह उस वैश्या को बहू बना कर घर लाना चाहते थे। लेकिन उस वैश्या में एक खराबी थी, उसे एक मानसिक रोग था। उस रोग के प्रभाव में वह अपने आपको एक बेंत की कुर्सी समझती थी। वह शादी के लिये इसी कारण राजी नहीं थी! एक इन्सान की कुर्सी से शादी कैसे हो सकती है! हां वह नेता होता तो बात और थी, यह भाई तो जमींदार था। कुर्सी का कहना था कि वह उसे रेहड़े पर लाद कर ले जाये जैसे फर्नीचर ले जाया जाता है और आंगन में उसे डाल दे ताकि सर्दियों में कुर्सी पर बैठ कर धूप सेक सके। लेकिन सुंअर तो उसे बारात ले जाकर घर लाना चाहता था। दोनों ही अपनी-अपनी जिद्द पर अड़े रहे। मां के जोर देने पर सुंअर को संजोगिता नामक स्त्री से शादी करनी पड़ी। लेकिन सुंअर संजोगिता

को कुर्सी के प्यार में डूबे होने के कारण पति का प्यार न दे सका। उधर कुर्सी ने एक बच्चे को जन्म दिया। अब यह हुआ कि बच्चा इन्सान जैसा था, कुर्सी को उम्मीद थी कि उसके जरूर तिपाई या स्टूल नहीं तो कम से कम मूढ़ा तो पैदा ही होगा। बच्चे को इंसान की शक्ल का देखकर उसे सख्त धक्का लगा। इसी धक्के के सदमे से कुर्सी चल बसी। 'उन्हीं दिनों संजोगिता किस्सा कुर्सी का' फिल्म देखने चली गयी। फिल्म देखने के बाद उसे कुर्सी से हमदर्दी हो गयी। वह कुर्सी के बच्चे को घर लाई और उसका अपने बच्चे की तरह प्यार से लालन पालन करने लगी। दिल में यह भी आस थी कि शायद इस बच्चे का भी दिमाग खराब है और खुद को भी मूढ़ा समझता है तो बैठने के काम आयेगा। संजोगिता के अपना भी लड़का पैदा हुआ जिसका नाम प्रटाप रखा गया। कुर्सी के बेटे का नाम अचय था। दोनों भाईयों की तरह साथ-साथ बढ़ने लगे। प्रताप बहुत शैतान था,

साथ के बच्चों को बहुत तंग किया करता था। एक दिन उसने पड़ौस की फीता नाम की लड़की के बाल नोंच लिये, उसके कपड़ों पर गंदा कीचड पोत दिया और घर आकर सारा दोष अचय के सिर मढ़ दिया! लेकिन फीता और उसकी सहेली पैनी ने उसकी सारी पोल खोल दी। संजोगिता को प्रटाप पर बहुत गुस्सा आया! उसने प्रटाप की खूब मरम्मत की और प्रटाप से फीता की गंदी फ्रॉक धुलाई। धीरे-धीरे प्रटाप सुधरने लगा लेकिन अचय बढ़ने के साथ बिगड़ने लगा। वह बुरी सोहबत में पड़ गया—प्राय: आचार्य खजनीश के आश्रम में देखा जाता। अन्त में अचय घर से भाग गया और निखट्टू साधुओं के आश्रम में भर्ती हो गया।

END.

नये वर्ष १९७९ के संकल्प

और उन्हें तोड़ने के दीवाने विकल्प

प्रायः अधिकतर व्यक्ति हर नये वर्ष के आगमन पर कोई न कोई संकल्प लेता है। बाद में संकल्प निभाना मुश्किल हो जाता है वह टूट जाता है और अपने ऊपर ग्लानि आती है। दीवाना इस समस्या का हल लेकर आया है। कोई भी संकल्प कीजिये बगैर उसको तोड़े आप अपने संकल्प के जाल से निकल सकते हैं। कुछ उदाहरण पेश हैं—

मैं १९७९ वर्ष में लड़कियों को ताकना छोड़ पढ़ने की ओर ध्यान दूंगा ।
(यह ठीक भी है, ताकने से क्या हासिल होता है ? आपने पढ़ने का ही तो प्रण किया है । बस अब से हसीनों की आंखों की भाषा पढ़ने में अपने समय का सदुपयोग करें ।)

नये वर्ष से मैं संकल्प लेती हूं कि पति देव से किसी बात पर झगड़ा नहीं करूंगी ।
(मत कीजिये झगड़ा । झगड़े से बात भी नहीं बनती और टाइम भी बेकार जाया होता है । अब सीधे मार-पीट कर दिया करें । नतीजा भी फौरन मिलेगा ।

मैं अब से बहू को मिट्टी का तेल छिड़क कर जला मारने की धमकी नहीं दूंगी ।
(आपके सामने अब भी कई रास्ते हैं । गड़ासे या कुल्हाड़ी से टुकड़े-टुकड़े करने की धमकी दे सकती हैं । हाथी के पैरों तले कुचलवाने का अल्टीमेटम दे सकती हैं । बम और ग्रेनेड से उड़ाने की धमकी दे सकती हैं । बन्दूक और पिस्तौल की गोली खोपड़ी के आर-पार करने की धमकी दे सकती हैं ।

OFFICE
मैं सदा सच बोलूंगा । अपने मुंह से कभी झूठ बोल कर मुंह काला नहीं करूंगा ।
(ठीक है यह भी निभ सकती है। आपको जो कुछ झूठ बोलना हो। उसे लिखकर बता दिया कीजिये। इससे हैंड-राइटिंग भी सुधर जायेगी जबड़ों को भी आराम मिलेगा।)

मैं पड़ौसिनों से झगड़ा नहीं करूंगी ।
(आप मजे से पहले की तरह अपनी पड़ोसिनों से महाभारत रचाती रह सकती हैं क्योंकि प्रण आपका यह तो था कि अपनी पड़ौसिनों से झगड़ा नहीं करना ! आप कह सकती हैं कि मैंने हेमा मालिनी की पड़ौसिनों से झगड़ा न करने का प्रण किया था ।)

मैं सिगरेट और बीड़ी सदा के लिये छोड़ने का प्रण करता हूं ।
(यह तो मामूली सी बात है। आप अब पाइप पीना शुरू कर दीजिये। पाइप से फेफड़ों को जीवन दायिनी निकोटन भी अधिक मात्रा में गर्मा-गर्म मिलने लगेगी।)

परोपकारी

यह किसके रोने की आवाज आ रही है। देखूं तो।

अरे यह तो अपना मुन्ना है. क्या बात है बेटा. रो क्यों रहे हो. बताओ तो सही ?

मेरे पिता जी कहते हैं कि 'जो कुछ बचपन में मुझे नहीं मिला वह तुम्हें जरूर मिलना चाहिये।' अब मैं क्या करूं ?
तो इसमें रोने की क्या बात है ?

यह तो अच्छी बात है क्योंकि मैं तुम्हारे पिता जी को बचपन में जानता था. वे गरीब थे इसलिये बहुत सी चीजें नहीं मिलीं...

सो इसलिये वे चाहते होंगे कि तुम्हें वह सब जरूर मिले। है न यही बात ?
नहीं अंकल...

पिता जी कहते हैं 'मुझे चाहे स्कूल में कुछ नम्बर न मिलते हों, लेकिन तुम्हें जरूर मिलने चाहियें।'
THE NATIVE

डाक्टर साहब, आप यह गाँव छोड़कर जा रहे हैं। आपके बिना हम गाँव वालों का क्या होगा

मेरे भाई, हो सकता है कोई मुझ से भी काबिल डाक्टर यहाँ आ जाए।
अजी यह सब कहने की बातें हैं-

..आप दसवें डाक्टर हैं जिनकी बदली यहां से हो रही है. और हर डाक्टर कोई झूठी तसल्ली दे कर चला जाता है।

नया धारावाहिक उपन्यास (भाग-३)

सुबह का तारा

लेखक—संगीता

'विश्वास करो, दिनपर दिन तुम सुन्दर होते जा रहे हो।'

'आप आज मेरी पिसाई क्यों कर रहे हो।' सुशील ने और झेंपकर कहा, 'जो कुछ आप मेरे लिए कह रहे हैं, वही मैं आपके लिए कह सकता हूं। लेकिन इतना जरूर है कि जहां आप मुझे ले गये, वहां औरतें मुझसे पूछ रही थीं कि आपकी शादी हुई है या नहीं?'

'बहुत अच्छे?' रंजन मुस्कराया। 'मैं अपने आपको अच्छी तरह पहचानता हूं। यह तो नहीं कहता कि मेरी कोई उपेक्षा कर सकता है, लेकिन मेरी अपेक्षा लोग तुम्हारी ओर अधिक आकर्षित होते हैं।'

अचानक उसे याद आया कि आज शाम उसे मधु ने बुलाया था, इसलिए वह उठकर चला गया।

मधु उससे अपनी कोठरी में मिला करती थी। पहले भी उस पर कोई पाबन्दी नहीं थी, थोड़ी-बहुत थी भी तो हाई स्कूल करने के बाद खत्म हो गई थी। कालेज में को-एजुकेशन थी। लड़के-लड़कियां साथ पढ़ते थे लेकिन लड़कियों का ग्रुप अलग पढ़ता था। इसलिए कालेज में मुलाकात नहीं हो पाती थी। इसके अलावा सुशील डरता भी था। उसका विचार था कि अगर कालेज में किसी ने मधु के साथ बातचीत करते देख लिया तो उसका जीना दूभर हो जायेगा।

शीला भाभी इण्टर पास कर चुकी थीं और अब सामाजिक कामों में अधिक हिस्सा लेने लगी थीं। इसलिए उनसे मिलना-जुलना कम होता था, लेकिन उनके यहां हो जरूर आना था।

आज भी वह मधु से मिलने गया तो पहले शीला भाभी के पास पहुंचा। वह उसे देखते ही बोलीं—

'आइए मास्टर साहब! सुनाइए, क्या हाल है?'

'सब ठीक है। आप सुनाइए, क्या कर रही हैं?'

'आपको पता नहीं है सिन्हा साहब रोटरी क्लब के मैम्बर हो गए हैं। रोटरी क्लब एक ऐसा स्कूल खोलना चाहता है जिसमें लूले-लंगड़े और अपाहिज बच्चों को शिक्षा दी जाए। मैं उसी के लिए पढ़ती रही थी।'

एक बात बताइए भाभी, 'लोग अपाहिज बच्चे पैदा ही क्यों करते हैं?'

'हैं? यह आप क्या कह रहे हैं? यह तो भगवान की इच्छा पर निर्भर है।'

'नहीं भाभी, यह भगवान की इच्छा पर निर्भर नहीं है।'

'फिर क्या आपकी इच्छा पर है मास्टर साहब?' भाभी मुस्कराईं।

'मेरी इच्छा पर नहीं। यह इच्छा तो उस सामाजिक ढांचे की है जहां इस तरह के बच्चे पैदा होते हैं। आप तो जानती हैं कि जब बच्चों को उचित भोजन नहीं मिलता, उचित देखभाल नहीं होती तो ऐसे ही बच्चे पैदा होते हैं।'

'ठीक है। तो तुम चाहते हो कि स्कूल के बजाए ऐसे नर्सिग होम खोले जाएं जहां गर्भवती स्त्रियों को रखा जाए। उनकी देखभाल की जाए और समय-समय पर उनकी डाक्टरी जांच की जाती रहे।'

'इससे क्या होगा? पचास करोड़ की आबादी में अगर इस तरह के एक-दो नर्सिग होम खुल भी जाएं तो क्या होगा? बुनियादी बात तो यह है कि सबको लाभ तभी पहुंच सकता है जब सरकार की ओर से ऐसा कदम उठाया जाए। अगर सबको भरपेट तथा उचित भोजन मिले तो यह समस्या रहेगी ही नहीं। आपका रोटरी क्लब खैराती संस्थाएं स्थापित करता है। लोगों को यह बताता है कि हम खैरात कर सकते हैं और यह इसलिए कि लोग अपना अधिकार छीन न पायें। भीख और खैरात के अभ्यस्त रहें। और मोटे-मोटे सेठ, दया, दानवीर और सहानुभूति के चलते-फिरते विज्ञापन रहें।'

भाभी मुस्कराई और सुशील की ओर बड़े ध्यान से देखती हुई बोली—

'मास्टर साहब! आजकल आप ब[illegible] जोश में बोलने लगे हैं। मधु भी इसी त[illegible] बोलने लगी है। शायद आपका ही अ[illegible] पड़ा है।'

'आप पर भी असर पड़े तो जानूं।' सुशील ने मुस्करा कर कहा और उठ[illegible] चला गया।

मधु अपने क्वार्टर में ही थी। सुशी[illegible] को देखते ही हंस कर बोली—

'काफी देर लगा दी भाभी के पास!'

'मेरा विचार था कि तुम व[illegible]

मिलोगी।'

'मैं वहां अब थोड़ी-बहुत देर के लि[illegible] आती हूं।'

'क्यों? क्या नौकरी छूट गई?'

'नहीं! चाची ने काम कराना ब[illegible] कर दिया है। या यह समझिए कि मैंने [illegible] काम करना बन्द कर दिया है। अब मेरे जिम्[illegible] उनके कपड़े निकालना, उन्हें नहलाना औ[illegible] ऊपर के फालतू काम हैं।'

'तो फिर फीस वगैरह?'

'मुझे भी स्कॉलरशिप मिलता है!' मधु ने अकड़ कर कहा—'अब तो मैं उनके यहां खाना भी नहीं खाती। अपना खाना बनाती हूं। देखिए वह रहे बर्तन! बचाकर कुछ रुपये पिताजी को भी भेज देती हूं लेकिन समझ में नहीं आता पहले तो उनका काम पांच रुपये में चल जाता था लेकिन अब पच्चीस में भी क्यों नहीं चलता?'

'कहाँ से चले ? महंगाई ही इतनी बढ़ गई है । रुपये का मूल्य ही क्या रह गया है ?'

'बैठिए ! आज आपसे कुछ अच्छी-अच्छी बातें करने को जी चाह रहा है ।' मधु ने अचानक कहा ।

'क्या ये बातें बुरी थीं ?'

'नहीं तो लेकिन सुबह से शाम तक यही चर्चा तो चलता रहता है । आपका यह बी० ए० का अन्तिम वर्ष है । बी० ए० करने के बाद आप क्या करेंगे ?'

'एम० ए० करूंगा !'

'इसके बाद शायद रिसर्च करेंगे । और फिर नौकरी की खोज में चार साल बिता देंगे ।'

'क्या मतलब ?'

'मैं सोच रही थी कि आप अभी से कोई ऐसा काम शुरू कर देते कि हम लोग अपनी जिन्दगी बाकायदा बिताना शुरू कर देते ।'

'अभी जिन्दगी में कौन-सी बेकायदगी है ?'

'पता नहीं आप किस तरह से सोचते हैं ?' मधु के स्वर में झल्लाहट थी ।

'अगर सही सोचता हूं तो आपत्ति बेकार है । और अगर गलत सोचा करता हूं तो जिस तरह कहो, उस तरह सोचूं ।'

'इस समय आप बहस के मूड में हैं ।'

'असल में जब आदमी भड़का होता है तो इसी मूड में होता है । जहाँ मैं रहता हूं, वहां खाना मशीन से बनता है । बल्कि मशीनी अंदाज में तराजू में बनता है । हर चीज नपी-तुली होती है ।'

'आप जहां रहते हैं वहां के बारे में आपने कभी कुछ नहीं बताया । हमेशा टाल जाते हैं ।'

'मैं एक ऐसे देवता के साथ रहता हूं जो इस संसार का रहने वाला नहीं है ।' सुशील ने बड़े भावुक स्वर में कहा, 'मैं तुम्हें अपनी कमजोरी बताऊं । मैं उसके पीछे या सामने भी उसका नाम नहीं लेता । डरता हूं कि मैं उसका जितना सम्मान करता हूं यदि तुम उसका उतना सम्मान न कर सकीं, तो मुझे ही बहुत दुख होगा ।'

'हे भगवान ! वह कौन है ?'

'जो भी है, बस इतना समझ लो कि मैं उसके लिए सारी दुनिया को ठुकरा सकता हूं । वही मेरी जिन्दगी है ।'

'क्या मुझसे न मिलायेंगे ?' मधु के स्वर में उत्सुकता थी । 'सच बात तो यह है कि उनकी प्रशंसा सुन कर जलन-सी होने लगती है ।'

'प्रतिद्वन्द्विता कहो ।' सुशील ने मुस्करा कर कहा, 'ताकि मुझे भी खुशी हो । और कम से कम यह तो विश्वास हो जाए कि तुम भी मुझको चाहती हो ?'

'क्या विश्वास दिलाया जाए ?' मधु ने चंचलता से कहा, 'कहिए तो दो-चार पेज का लैटर लिख दूं कि रात में नींद नहीं आती है और खाटें काटे हैं । तुम मेरे पास होते हो गोया जब कोई दूसरा नहीं होता''वगैरह''वगैरह ?'

सुशील हंस पड़ा । फिर बोला—

'मैंने कुछ स्त्रियों के बारे में पढ़ा था और कुछ दिनों कुछ स्त्रियों को पढ़ाया था । मुझे आश्चर्य होता है कि भला ऐसी स्त्रिया भी हो सकती हैं ! कर्टबुल एन हैपी, अमृता प्रीतम की कहानियां पढ़ता था तो लगता था कि किस दिमाग से लिखा होगा और ऐसी स्त्रियां हैं भी या नहीं ? और जब मैंने मिस रज़ा को अब मिसेज हुस्नैन हैं और मिस तारा अग्रवाल को देखा तो मैंने सोचा कि दुनिया में यही दो स्त्रियाँ हैं । लेकिन अब जब से लखनऊ जाकर उन स्त्रियों को देखा जो एम० ए० हैं और मिसेज सूद और मिसेज भटनागर को देखा तो समझ में आया कि अपने देश में भी नयी नारी जन्म ले रही है और तुम भी मुझे नयी नारी ही दिखायी देती हो !'

'यह नयी नारी आपको बुरी मालूम होती है ?'

'नहीं, बहुत अच्छी लगती है । लेकिन मैं यह चाहता हूं कि केवल अपने बदन को ही वह नया न करे, बल्कि अपनी आत्मा को भी नया बनाए । होता यह है कि आज की नारी बालों की सजावट के नए ढंग सोचती है । चेहरे के मेकअप के नये सामान तलाश करती है । कपड़ों के नये डिजायनों के पीछे भागती है । बदन बन-संवर कर खिल जाता है लेकिन आत्मा गन्दी ही रहती है । गन्दी और निर्लज्ज ! इस नये संवरे जीवन में शक्ति नहीं होती । बदन का जोड़-जोड़ कराहता और दर्द करता रहता है । आँखें बीमार, चेहरा सूखा हुआ ! थोड़ा-सा बोझ उठाना पड़े तो नाजुक कमर टूट जाए । आज के युग को नजाकत की पुड़िया नहीं चाहिए । आज की नारी सोसायटी में ताश खेलना चाहती है, कर्नटिनी, शैरी, मोर्ट और बीयर पीना जानती है । और क्या-क्या जानती है तुम्हें क्या बताऊं,' सुशील ने ठण्डी सांस भर कर कहा, 'सिर्फ जिन्दा रहना जानती है ।'

'आप असल में यह भूल जाते हैं कि औरत बहुत नाजुक होती है । इसीलिए तो पुरुष को उससे सर्वाधिक आनन्द प्राप्त होता है !'

'नारी को यह नाम देने वाले जागीरदार और पूंजीपति थे जिनकी दृष्टि में अपनी माँ, अपने बेटे की मां और अपने पोते की माँ का मूल्य उस पालतू जानवर से अधिक नहीं था, जिससे दिल बहलाया जाता है, खिलौने की तरह खेला जाता है और जब खिलौने का रंग उतर जाता है तो उसे फेंक दिया जाता है । मैं स्त्री को पुरुष का साथी मानता हूं । उन दोनों के बीच

शेष पृष्ठ ३८ पर

चौधरी साहब थम तो घर से कमजोर होकर आ गिये हो
भैंस वैंस ने लात लूत तो नहीं मार दिया ?
हम पूरे दो हफ्ते गाँव-गाँव इकतारा लेकर घूमे ! किसानों को किसान सम्मेलन में भाग लेने के लिये कहा। यह देख चूहे, घूमते-घूमते म्हारे तलवों में छाले भी पड़ गये। दिन-रात एक कर दिया।
जभी तो इतना बड़ा किसान सम्मेलन बोट क्लब पर हुआ कि सारी दिल्ली वालों की हवा सरक गयी। किसानों के ठट्ठ के ठट्ठ ऐसे आये जैसे टिड्डी दल आती है ! जमीन कांप उठी, चारों दिशायें थर्रा गयीं। मेरा तो ख्याल है कि इन्द्र का सिंहासन भी डोल गया होगा। अब आप दोनों होशियार रहना। किसान सम्मेलन के तप से थमको डिगाने के लिये जरूर इन्द देवता मेनका और उर्वशी को भेजेंगे ! अपने दिल और फेफड़ों को कौड लिवर आयल और विटामिन बी कॉम्पलैक्स खाकर मजबूत कर लो। थारे किसान सम्मेलन ने एक ही खराबी करी, वह यह कि दिल्ली की सड़कों के किनारे हजारों क्विटल लीद करके चले गये।
अब मुझे कोई शक नहीं है कि चौधरी चरण सिंह जी जल्दी ही प्रधान मंत्री बनेंगे ! और उनके प्रधान मंत्री बनते ही थम दोनों को भी जरूर मंत्री पद मिलेगा। थम ने इतना काम करा है।
हमें कुर्सी या मंत्री पद की कोई लालसा नहीं है। हम तो निस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करने में विश्वास रखते हैं। हमें कुछ नहीं चाहिये।
म्हारे खेतों में खूब पैदावार होती है। हमने मंत्री बनके क्या करना है ? हम मोह माया से दूर देश और जनता की सेवा में अपना जीवन का एक-एक सेकेंड लगाना चाहते हैं
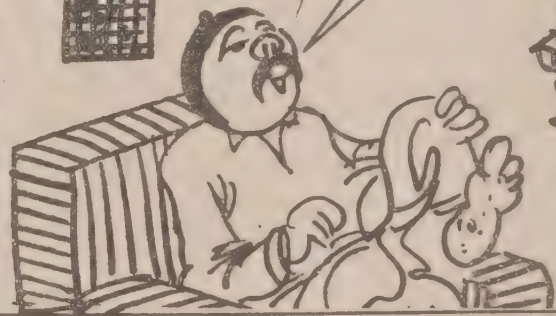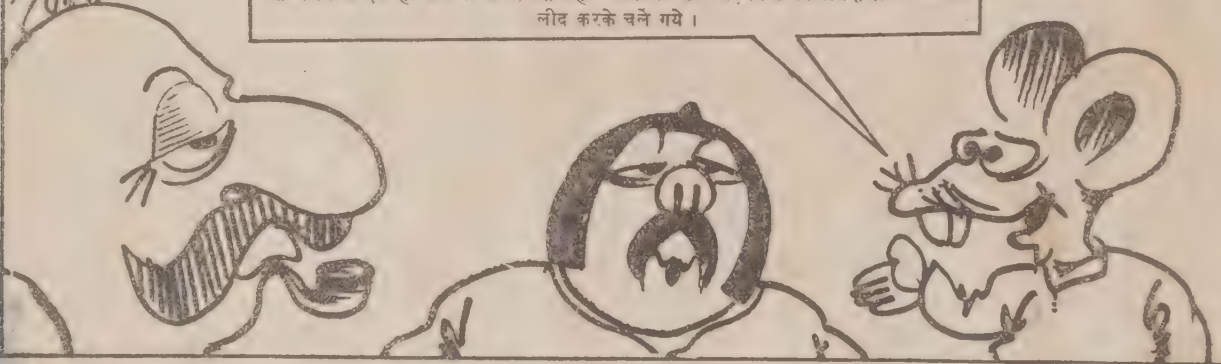
यही तो जनता पार्टी मार खा गयी । थमारे जैसे बीड़ी की आग में तपे नेता देश का नेतृत्व करने के लिये आगे नही आते । नकली नेता आकर मंत्री बनते हैं । थम असली नेता राज चलाने में कोई रुचि नहीं रखते ! अब यह नही हो सकता । थमको मिनिस्ट्री सम्भालनी पड़ेगी वर्ना देश के करोड़ों लोग आकर थमारे दरवाजे पर धरना देंगे ।

अगर जनता मजबूर करेगी तो हम मंत्री पद भी जनता की इच्छाओं का आदर करते हुये सम्भाल लेंगे पब्लिक को हम पर भरोसा है तो हम अपने को उस काबिल साबित करेंगे ।
समान
संसार को पता लग जायेगा कि पिलपिल और सिलबिल जिम्मेदारी से नही डरते ।
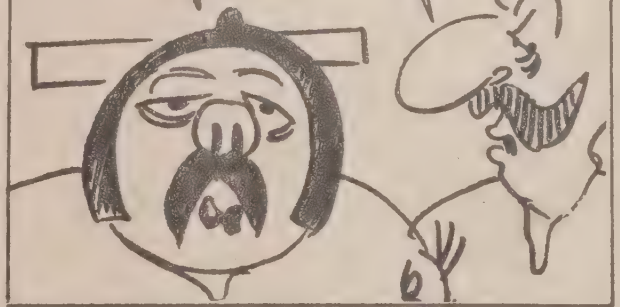
यही तो फर्क होगा कि मंत्री बनने पर हमको अपनी साइकिल निजामुद्दीन के चौराहे से चिड़ियाघर की बजाय इंडिया गेट की तरफ मोड़नी पड़ेगी ।
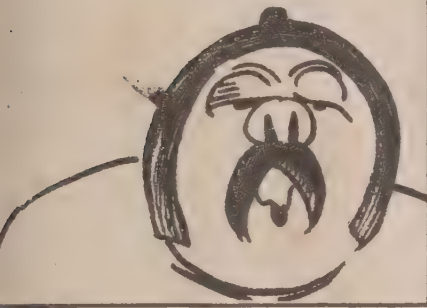
हद हो गयी ! रहे थम जाट के जाट ही ! अरे मिनिस्टर बनने के बाद थमारे पास साइकिल नही होगी ! इम्पाला शेवरलेट और मर्सीडीज की लम्बी-लम्बी गाड़िया होंगी ।

हम यह तो भूल ही गये थे । हमें अपना क्वार्टर भी छोड़ना पड़ेगा, रेस कोर्स सफदरजंग मे सरकारी कोठी मे जाना पड़ेगा, जहा गेट पर संतरी होगा और बड़ा सा हरा-भरा लॉन होगा ।

अगर जनता की यही मर्जी है तो यही सही ! हम कोठी और कारों का बोझ भी सह लेंगे । जनता की निस्वार्थ सेवा करने का प्रण लिया है ।
हम अपनी-अपनी मिनिस्ट्रियों में बीस-बीस कई नामों की कमेटियां बनायेंगे और अपने सारे रिश्तेदारों को उनके चेयरमैन बना देंगे ! अपने रिश्ते के सारे क्या याद करेंगे ? म्हारी जय-जयकार करेंगे ।
अपने गांव मां स्वीमिंग पूल, जिमखाना, रेसक्लब, हवाई अड्डा, रेलवे स्टेशन, यूनिवर्सिटी, स्टील मिल, तेल के कुयें, यू. एन. ओ. का दफ्तर, टेस्ट क्रिकेट सेंटर, बन्दरगाह, भेल, हाल तथा एच. एम. टी की शाखायें भी खुलवायेंगे अपने गाम को हिल स्टेशन भी बनायेंगे ।
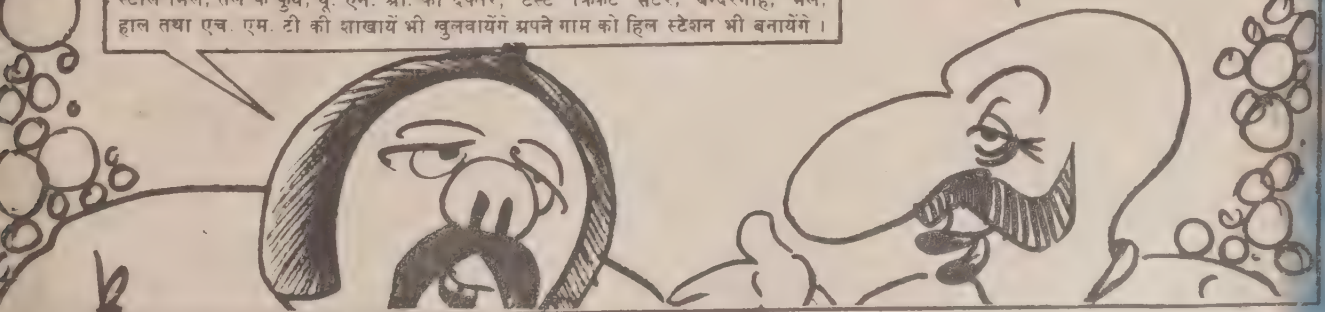
वत्त मंत्रालय ही लूंगा । सारे पैसे का लेन-देन
लय ही करता है न । फाइनान्स सैक्रेटरी तथा
अपने हाथ में करके स्टेट बेंक और रिजर्व बेंक
के नाम कराऊंगा । गांव की सारी जमीन के
कागजात बदलवा के अपने नाम ।

रिजर्व बेंक में ७० टन सोना पड़ा है वह न भूल जाना ।
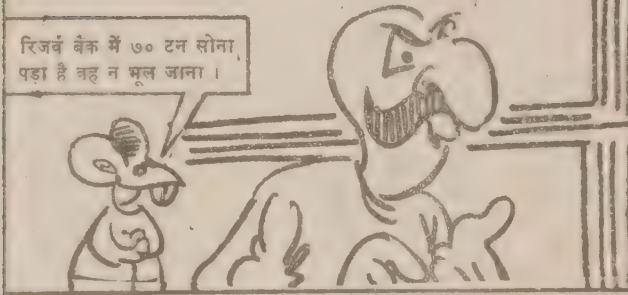
गाम मां हमारी कई लोगों से खुंदक है, मंत्री बनने पर पहला काम उनसे बदला लेने का करूंगा । पुलिस को आर्डर देकर सबको मैं थाने बुलवा कर पिटाई करवाऊंगा । ऐसी पिटाई कि उनकी हड्डी पसली टूट जाये, फिर स्मगलिंग का झूठा केस बनवा कर उनको पच्चीस-तीस साल चक्की पीसने भेज दूंगा ।

धन्य हो !
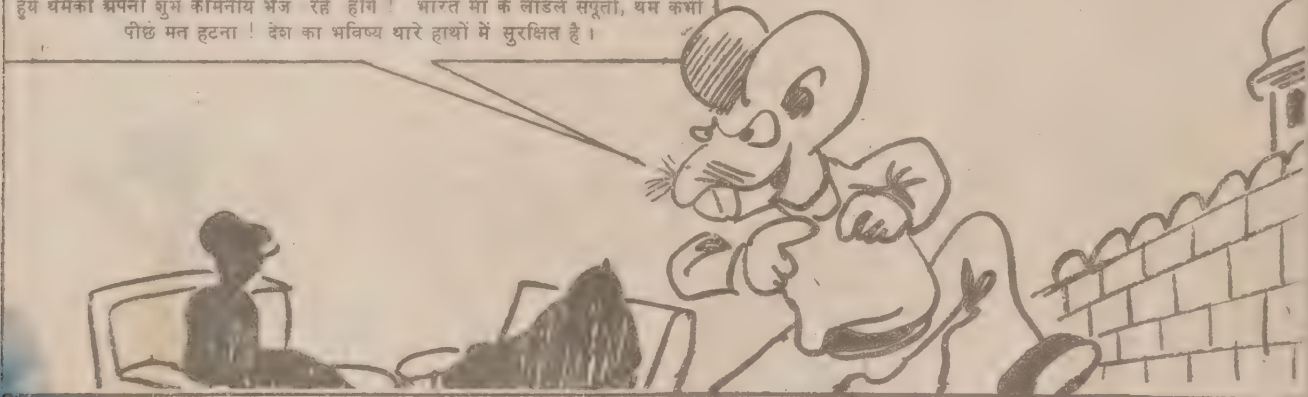
चूहे, तूने इसमें हवा भरने के लिये पम्प ज्यादा मार दिया, अब यह अपने काबू में नही है, खुद को सचमुच ही गृहमंत्री समझ रहा है। इसे ज्यादा मत छेड़ वर्ना, यह तुझे मीसा में अन्दर कर देगा।

अरे इब कहां भाग्गा जा रिया है ? हाथ मां छड़ी उठा रखी है और अकड़ के मुंह आसमान की तरफ उठा रखा है ! बात नहीं सुनता।

आपके पत्र
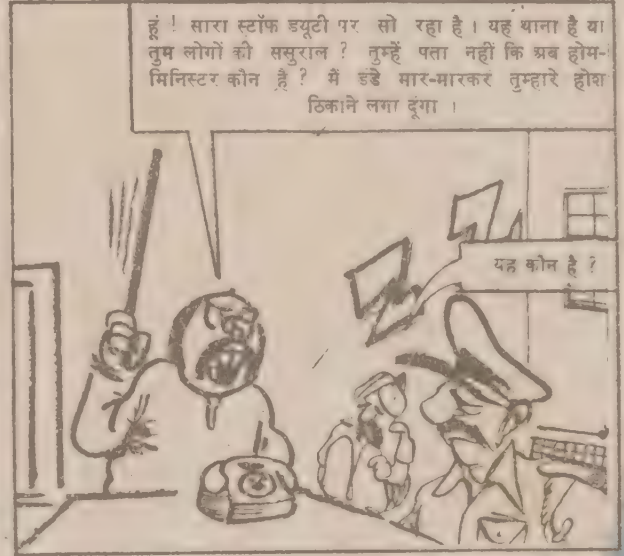
दीवाना का प्यारा-प्यारा अंक ३८ प्राप्त हुआ। दीवाना ही केवल ऐसी पत्रिका है. जो कि हर पाठक के मुख पर,हंसी लाती है। और उनके मन-पसन्द चीज बहुत खुबी से सजा कर हमारे सामने पेश करती है। दीवाना में और पत्रिकाओं की अपेक्षा अधिक पन्ने एवं लम्बे पेज होते है जिसमें अधिक सामग्री समा जाती है और 'दीवाना' प्रेमियों को 'दीवाना' कर देती है। अब आप जल्द से समाचार पृष्ठ भी आरम्भ कर दें जिसमें हमें मजेदार खबरें पढ़ने को मिलें। सिलबिल-पिलपिल इतना रोचक होता है पर रंगीन ना होने के कारण मोटू-पतलू वाला स्वाद नहीं रहता। आशा है आपके घर में देर है अंधेर नहीं !

कमल मोदीत, मिठाई लाल—दिल्ली

दीवाना अंक ३७, मिला मुख पृष्ठ पर चिल्ली ने हमें दाढ़ी बनाने (सेव करने) का तरीका सिखला दिया। विशेष कर चिल्ली लीला, मुफ्त ! मुफ्त !! स्वेटरों का दीवाना उधेड़बुन, ट्रेनिंग सेंटर काफी अच्छा रहा। आप चाचा चौधरी पुनः शुरू करें. यह हमारी आपसे प्रार्थना है।

रतन कुमार प्रधान—गौहाटी

'मैं दीवाना का काफी पुराना पाठक हूं और दीवाना को अन्य पत्रिकाओं की अपेक्षा बड़े चाव से पढ़ता हूं। दीवाना में मैं अनेक परिवर्तन देख चुका हूं। दीवाना दिन-रात तरक्की कर रहा है। दीवाना में मैंने एक फोटू छपने को भेजा था बहुत दिन हो गये लेकिन प्रकाशित नहीं हुआ, क्या कारण है ?

पवन कुमार वर्मा—डिवाई

नम्बर आने पर फोटो अवश्य छपेगा। —सं०
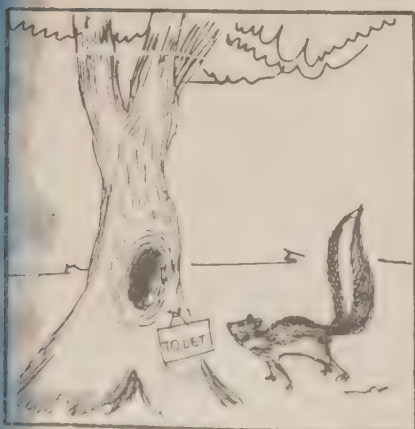
दीवाना का अंक ३८ मिला। काफी इन्तजार के बाद मिला। इस अंक में मोटू-पतलू, मदहोश, चाचा बातूनी आदि विशेष रुचि कर लगे। मुख पृष्ठ चिल्ली की दीवानगियों से हंसा-हंसाकर पागल बनाता हुआ, दीवाना कार्ड, सिलबिल-पिलपिल, फिल्मी स्टारों के आजादी भाषण आदि। मैंने दीवाना उन्हें दिखाया और सारी बात बता दी तो वे बोले, 'सम्पादक साहब से पूछना कि दीवाना आसानी से और जल्दी मिलने का तरीका क्या है ?'

अनुप त्रिपुरारी शर्मा—तपकरा

घर बैठे दीवाना मंगाने के लिये मनीआर्डर से ४८ रु० भेजकर इसके वार्षिक सदस्य बनिये। —सं०

हास्यप्रद सामग्री से ठसाठस भरा अंक ३८ मिला। मुखपृष्ठ पर चिल्ली की सूझबूझ देखकर मैं उसी तरह बिस्मिल हो गया जिस प्रकार हंसते-हंसते आंखों में आंसू आ जाते हैं। 'बात-बे-बात की' की बात लाजवाब लगी। चिल्ली लीला के अन्तर्गत डा० चिल्ली द्वारा बताया गया अनिद्रा का इलाज मजेदार होने के साथ-साथ साइंटिफिक भी था। दैनिक जीवन की गेंदबाजी और दीवाना में बताई गई टेक्नीक दीवानों के दैनिक जीवन में उपयोगी सिद्ध होंगी, जिसके लिए लेखक धन्यवाद के पात्र हैं। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् गीत की पैरोडी दिलचस्प थी। काका के कारतूस एवं अन्य सभी स्तंभ मजेदार एव ज्ञानवर्धक रहे। **डा० सतीन्द्र जैन—जबेरा**

---

२३ नवम्बर का दीवाना पूरे एक सप्ताह बाद मिला। परन्तु इस अंक की सामग्री पढ़कर देरी से मिलने की पूर्ति हो गई। फिल्म पैरोडी सिद्धार्त, बन्द करो बकवास, परोपकारी, मदहोश, पंचतन्त्र, दीवानी फिल्मी कहानियां, पिलपिल सिलबिल, आपस की बातें सभी सामग्री बहुत ही पसन्द आई। 'मनोरंजन स्ट्रीट' कब से आरम्भ कर रहे हैं ? अंक बहुत ही मनोरंजक रहा, अतः बधाई।

रमेशचन्द्र—पलवल

दीवाना अंक ३८ मिला। पढ़कर आनन्द मग्न हो गया। 'संगीता की दूसरी आत्मा' का अन्त खटकता है। 'मोटू-पतलू', 'परोपकारी', मदहोश आदि चित्रकथायें रोचक लगीं। कृपया आप 'दीवाना' अंग्रेजी में भी प्रकाशित करें। आपने पाठकों के अनुरोध पर पैरोडी व कविता प्रकाशित करना आरम्भ किया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। कृपया चुटकले भी प्रकाशित करें।

योगेश कुमार—शेमापु

दीवाना का अंक ३९ पढ़ा। बहुत पसन्द आया। इस अंक में चिल्ली लीला, काका के कारतूस, परोपकारी, सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, बन्द करो बकवास आदि बहुत पसन्द आये। अगले अंक की प्रतीक्षा में। **मोहन प्रकाश—ग्वालियर**

दीवाना अंक ३८ मिला। मुखपृष्ठ काफी अच्छा था। दूसरी आत्मा का आखिरी भाग हृदय को छू देने वाला था। पिलपिल-सिलबिल, मोटू-पतलू भी अच्छे लगे। देसी घी का हलुवा, मन के लड्डू कहानियां मजेदार रहीं। बाकी सारे फीचर काबिले तारीफ थे। आशा है अगला अंक भी रोचक होगा और समय पर आयेगा।

जुबैर अहमद—नई दिल्ली

दीवाना का अंक ३८ ग्यारहवीं बार बुक स्टॉल पर चक्कर काटने के बाद मिला जिसके कारण प्रतियोगिता में भाग नहीं ले पाया। दैनिक जीवन की गेंदबाजी और दीवाने टेक्नीक, अच्छी खबर बुरी खबर सिलबिल-पिलपिल, मूर्खतापूर्ण प्रश्नों के मूर्खतापूर्ण उत्तर और सवाल यह है ? में से कौन-सा अधिक रोचक है यह फैसला आसमान से तारे तोड़ने के बराबर था। मोटू-पतलू में सस्पेंस बरकरार है। फिलहाल अगले अंक तक दुआ सलाम।

पवन खत्री—इन्दौर

दीवाना का अंक ३८ मिला। बहुत पसन्द आया। मोटू-पतलू की जासूसी कहानी बहुत अच्छी लग रही है। कृपया आप बच्चा जमूरा किसी और पृष्ठ पर दिया करें, मोटू-पतलू के पूरे आठ ही पृष्ठ होने चाहियें। आपने फिल्म पैरोडी क्यों बन्द कर दी है। कृपया फिल्म पैरोडी जरूर दिया करें।

सुरिन्द्र सिंह—लुधियाना

मोटू-पतलू के कारनामों में

घसीटा राम की उड़ान

जासूसी की हेरा फेरी में पुलिस ने घसीटा राम को हवालात में बन्द कर दिया था। हवालात से बाहर आया तो उसने अपने नये जासूस मित्र छछून्दर को बताया कि उसकी कमर में अजीब-सा दर्द है। घसीटा राम को इस बात का अनुभव है कि किसी इलाज के लिए डा० झटका के पास जाने से तो अच्छा है कि आदमी आराम से शमसान घाट पर जाकर पांच मन लकड़ियां बिछाये और उन पर लेट जाये। मगर भाई छछून्दर के कहने पर उसने फिर एक बार डां० झटका को आजमाना स्वीकार कर लिया और उनके क्लीनिक पर जा पहुंचा।

अरे, तबीयत खुश हो गई। कमर का दर्द ऐसे गायब हुआ है, जैसे गधे के सिर से सींग।
देखा दवा का असर। बीस साल में आज पहली बार इसने अपने आपको असली नाम से पुकारा है।

कमर में जहाँ दर्द था वहां खुजली सी हो रही है लगता है वहां कुछ उभर रहा है।
जनता पार्टी सरकार से तुम्हारी कमर पर बुलडोजर फेरने के लिये कह दूं?

तभी वहा मोटू पतलू भी आ गये।
डाक्टर झटका की दवा खा कर पता नहीं घसीटा राम की कमर पर क्या उभर आया है?
अरे अब कोई नया अड़ंगा खड़ा कर रहे हो क्या?

कमीज़ उतार कर देखो!
अरे मैं मर गया। कमर पर कुछ फड़फड़ा रहा है।
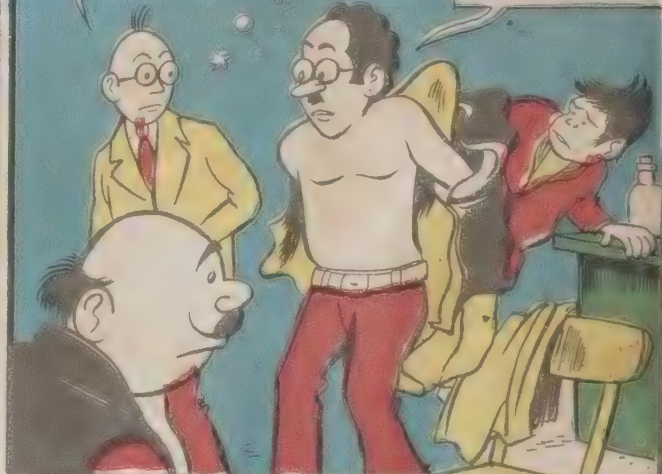
अरे बाप रे! कमर के दर्द की दवाई से कमर पर इतने बड़े पर उग आए हैं।
यह गिद्ध बन गया है!
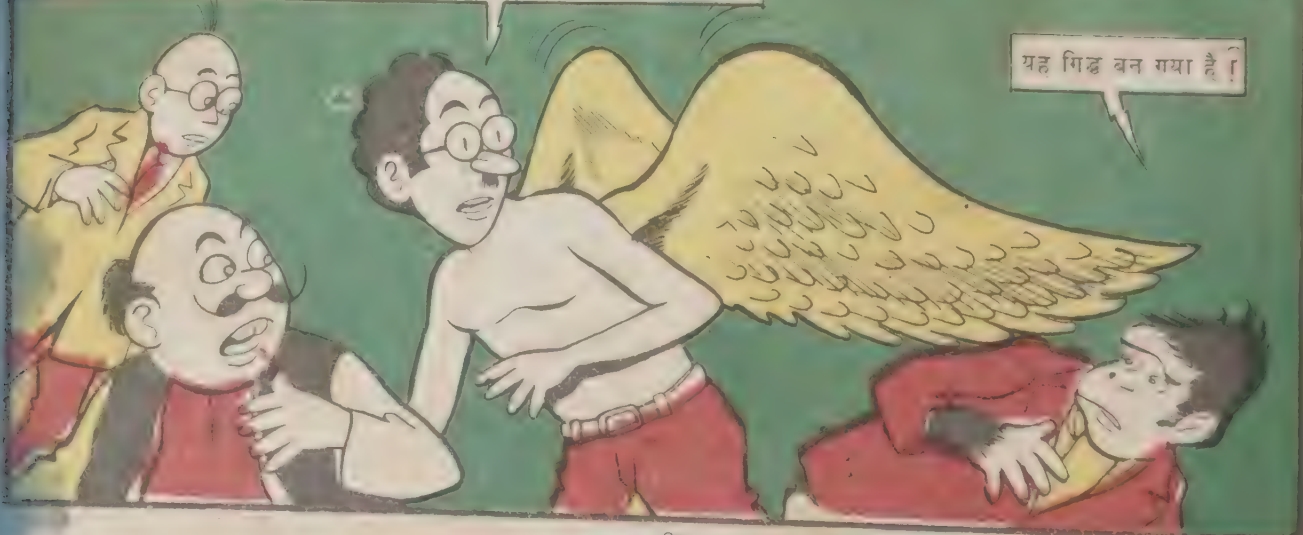
उसका गिराया एक बक्स सीधा घसीटा राम के सर पर आ गिरा और उसे दिन में तारे दिखा दिये ।
सत्यानास हो गया मेरे फ्लाईंग डिटैक्टिव का ।
उसी हैलिकाप्टर से अब एक पैराशूट कूदा ।
पैराशूट से कूदने वाला नीचे आया तो अब वह घसीटा राम की कमर पर चढ़ गया था ।
अरे यह क्या हो रहा है । ऐसी फाकट की सवारी के लिये मैं ही रह गया हूं । ऐसे बिना हाथ फेरे तो कोई घोड़ा भी किसी को अपने ऊपर नहीं चढ़ने देता ।
बिना हाथ फेरे सही, पर यह बिना टांग फेरे नही चढ़ा है ।
अरे यह कैसा बेवकूफ उल्लू डोरियों में फंसा है !
गलत कह रहे हो
दुनिया में आज तक कोई उल्लू बेवकूफ नहीं हुआ ।
डोरियों में उलझा कर मेरी पैंट फाड दी । मैंने भी इसे मजा न चखा दिया तो मेरा नाम नहीं ।
तुम्हारा नाम है क्या, यही समझ में नहीं आता, चिमगादड़ को इस बात का दुख है कि वह न परिंदों में है, न चरिन्दों में, और तुम्हारी हालत यह है कि न तुम परिन्दों में हो, न चरिन्दों में हो, न चिमगादड़ों में से और न आदमियों में हो ।
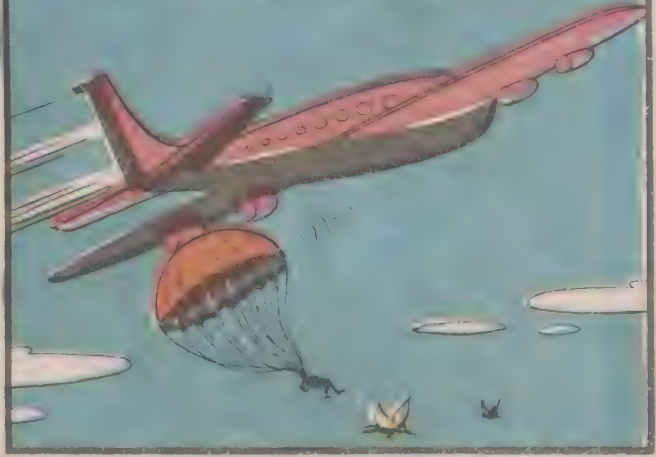
जी हां, अगले सप्ताह अवश्य देख लेना।
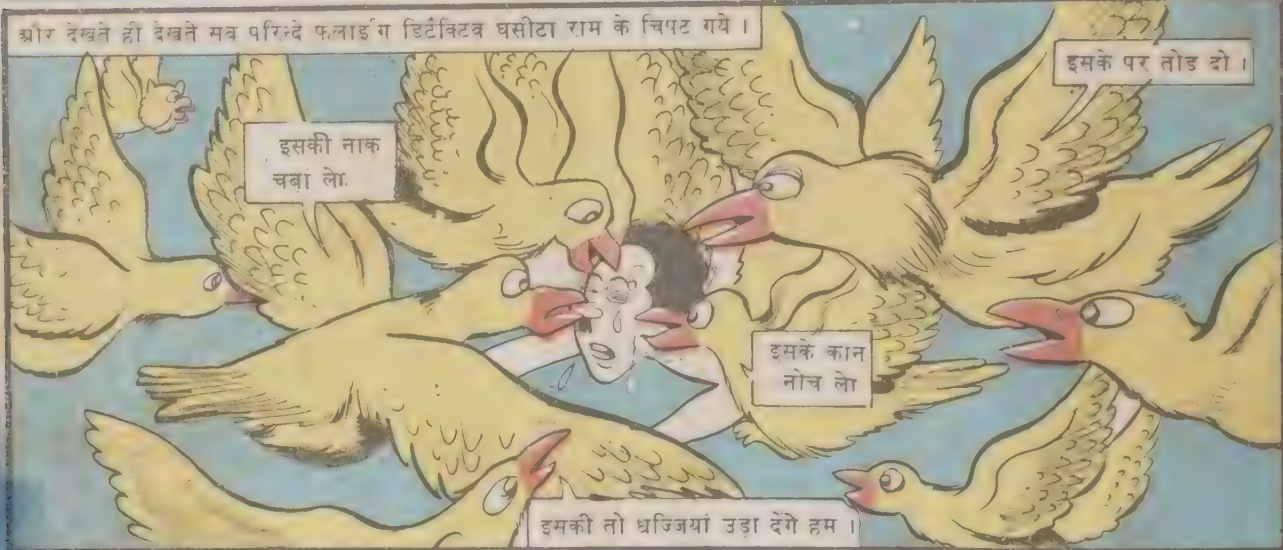
भारत वैस्ट-इंडीज टैस्ट क्रिकेट के रोचक आंकड़े

(वर्तमान १९७८-७९ शृंखला से पहले)

एक

भारत बनाम वेस्ट इंडीज (१९४८-४९ से १९७६ तक)				
भारत में	टेस्ट खेले	भारत ने जीते	वेस्ट इंडीज ने जीते	ड्रॉ
बंबई	५	—	२	३
कलकत्ता	४	१	२	१
दिल्ली	३	—	१	२
कानपुर	१	—	१	—
मद्रास	४	१	२	१
बंगलूर	१	—	१	—
योग	१८	२	९	७
वेस्ट इंडीज में				
बारबाडोस	४	—	३	१
जॉर्ज टाउन	२	—	—	२
किंग्सटन	५	—	३	२
त्रिनिदाद	८	२	२	४
योग	१९	२	८	९
कुल योग	३७	४	१७	१६

दो

भारत तथा वेस्ट इंडीज की ओर से टेस्ट मैचों में सर्वाधिक रन

टेस्ट	पाली	अविजित	रन	शतक	औसत
भारत — पाली उमरीगर					
५९	९४	८	३६३१	१२	४२.२२
वेस्ट इंडीज — गैरी सोबर्स					
९३	१६०	२१	८०३२	२६	५७.७८

सर्वाधिक विकेट

वेस्ट इंडीज – लांस गिब्स – ७८ टेस्ट मैच — ३०९ विकेट
भारत – बिशन सिंह बेदी – ६० टेस्ट मैच — २५० विकेट

तीन

एक पाली में ६०० से अधिक रन

भारत – एक बार भी नहीं

वेस्ट इंडीज	८/६४४	दिल्ली	१९५८-५९
"	८/६३१	किंग्स्टन	१९६१-६२
"	६३१	दिल्ली	१९४८-४९
"	६/६२९	बंबई	१९४८-४९
"	५/६१४	कलकत्ता	१९५८-५९
"	६/६०४	बंबई	१९७४-७५

चार

वेस्ट इंडीज के विरुद्ध द्विशतक बनानेवाले भारतीय खिलाड़ी

२२०	सुनील गावस्कर	पोर्ट ऑफ स्पेन	१९७०-७१
२१२	दिलीप सरदेसाई	किंग्स्टन	१९७०-७१

भारत के विरुद्ध द्विशतक बनानेवाले वेस्ट इंडीज के खिलाड़ी

२५६	रोहन कन्हाई	कलकत्ता	१९५८-५९
२२०	फ्रैंक वारेल	किंग्स्टन	१९५२-५३
२०२	वीक्स	पोर्ट ऑफ स्पेन	१९५२-५३

पांच

एक पाली में ७ व उससे अधिक विकेट लेनेवाले गेंदबाज

भारत की ओर से

९/१०२	सुभाष गुप्ते	कानपुर	(१९५८-५९)
७/१५७	चंद्रशेखर	बंबई	(१९६६-६७)
७/१५९	दत्तू फड़कर	मद्रास	(१९४८-४९)
७/१६२	सुभाष गुप्ते	पोर्ट ऑफ स्पेन	(१९५२-५३)

वेस्ट इंडीज की ओर से

९/९५	जे नारीजा	पोर्ट ऑफ स्पेन	(१९७०-७१)
८/३८	लांस गिब्स	ब्रिज टाउन	(१९६१-६२)
७/६४	एंडी राबर्ट	मद्रास	(१९७४-७५)
७/९८	लांस गिब्स	बंबई	(१९७४-७५)

छह

वेस्ट इंडीज के विरुद्ध एक शृंखला में ७०० से अधिक रन भारतीय खिलाड़ी द्वारा

खिलाड़ी	रन	औसत	वर्ष
गावस्कर	७७४	१५४.८०	१९७१

वेस्ट इंडीज के खिलाड़ी द्वारा भारत के विरुद्ध

वीक्स	७७९	१११.२८	१९४८-४९
वीक्स	७१६	१०२.२८	१९५२-५३

सात

वेस्ट इंडीज का न्यूनतम स्कोर भारत के विरुद्ध

भारत में

१५४	मद्रास	१९७४-७५

वेस्ट इंडीज में

२१४	त्रिनिदाद	१९७०-७१

भारत का न्यूनतम स्कोर वेस्ट इंडीज के विरुद्ध

भारत में

११८	बंगलूर	१९७४-७५

वेस्ट इंडीज में

९७	किंग्स्टन	१९७५-७६

आठ

वेस्ट इंडीज के विरुद्ध शतक बनानेवाले भारतीय खिलाड़ी

सुनील गावस्कर (५), पाली उमरीगर (३), चंदू बोर्डे (३), दिलीप सरदेसाई (३), विजय हजारे (२), विश्वनाथ (२), रूसी मोदी, विजय मांजरेकर, पंकज राय, एम० एल० आप्टे, बृजेश पटेल, मुश्ताक अली, सलीम दुर्रानी, फारूख इंजीनियर, हेमू अधिकारी तथा सोलकर — एक-एक शतक।

भारत के विरुद्ध शतक बनानेवाले वेस्ट इंडीज के खिलाड़ी

गारफील्ड सोबर्स (८), वीक्स (७), वालकट (४), विवियन रिचर्ड्स (४), रोहन कन्हाई (४), स्टालमेयर (२), ए० एफर्ट (२), सी० डेविस (२), लॉयड (२), फ्रेड्रिक्स (२), बूचर (२) कालीचरण (२), वारेल मैकमॉरिस, होल्ट, पेराड्यू, क्रिस्टीनी, गोम्ज स्मिथ, हंट सोलोमन, ग्रीनिज — सभी एक-एक शतक।

राइट-हाफ

खेल के मैदान में राइट-हाफ की स्थिति सबसे अधिक सुविधापूर्ण होती है। राइट-हाफ की स्थिति, लैफ्ट-हाफ की स्थिति से बहुत कुछ समानता रखती है। दोनों की स्थितियों में मुख्य अन्तर यह है कि मैदान में वे एक-दूसरे के आमने-सामने खड़े होते हैं। राइट-हाफ को अपने फारवर्डों की सहायता करनी होती है। उसे अधिकतर अपने राइट-इन को पास देना आवश्यक हो सकता है, किन्तु यदि राइट-हाफ का सीधा पास उसके सैण्टर फारवर्ड को मिल जाए तो अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकता है। राइट-हाफ को विपक्षी लैफ्ट-विंग को बराबर घेरे रहना पड़ता है। उसे यह भी लाभ रहता है कि उसके सामने विपक्षी टीम के बायें बाज़ू के खिलाड़ी रहते हैं। राइट-हाफ को हर संभव प्रयत्न करना पड़ता है कि खतरनाक प्रतिपक्षी फारवर्डों को वह आउट-लैफ्ट तक न पहुंचने दे। यदि आउट साइड-लैफ्ट गोल-रेखा के निकट पहुंच गया हो तो राइट-हाफ को 'डी' के सिरे पर खड़े होकर प्रतिपक्ष के सम्भावित 'डायगनलपास' को रोकने की प्रतीक्षा करना आवशयक हो जाता है।

यदि राइट-हाफ सतर्क रहे तो आक्रमण-कारी फारवर्डों की गेंद पर क्रास हिट लगाने का अवसर ही नहीं मिल सकता और यदि विपक्षी राइट विंग से कोई गेंद पास के रूप में आये तो उसे भी वह उनके लैफ्ट विंग को मिलने से पूर्व ही, बेदखल कर सकता है।

आक्रमण के मौके पर प्रतिपक्षी आउट साइड राइट पर दृष्टि रखना राइट-हाफ का मुख्य कर्तव्य है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि राइट-हाफ का खेल रुढ़िबद्ध या अपरिवर्तनीय नहीं होना चहिए। 'पास' देने से पूर्व उसे अपने तथा प्रतिपक्षी खिलाड़ियों पर एक दृष्टि डालना आवश्यक समझना चहिये।

जब राइट बैक विपक्षी लैफ्ट के आक्रमण की रोकथाम करता है तो राइट-हाफ को उसके बैक की खाली जगह की रक्षा भी करनी पड़ती है। इसी तरह यदि राइट-हाफ, उसके लैफ्ट-इन या किसी अन्य फारवर्ड खिलाड़ी से जूझ रहा होता है तो राइट बैंक को उसकी जगह पर सतर्क रहना आवश्यक है। अतएव राइट फुल बैंक और राइटहाफ को एक-दूसरे से तालमेल रखना आवश्यक है।

लैफ्ट-हाफ

इस स्थिति के खिलाड़ी को अपने खेल में थोड़ी कठिनाई होती है, जिसका सामना करने के लिये उसे अधिक चतुरता से काम लेना पड़ता है; क्योंकि लैफ्ट हाफ को अपने विरोधी राइट आऊट या अन्य फारवर्डों से बाईं ओर से मुकाबला करना होता है, जबकि विपक्षी खिलाड़ी को इसके विपरीत दाईं ओर गेंद रखने का और दाईं ओर से जूझने का लाभ मिलता है। खेलते समय अनेक बार ऐसे मौके आते हैं, जब लैफ्ट हाफ थ्रू पास नहीं दे पाता या लम्बा हिट नहीं लगा पाता, तब उसके लिये एक मात्र यही मार्ग रह जाता है कि वह गेंद को 'स्कूप' करे अर्थात् उसमें गेंद को उछालकर दूर फेंकने की सामर्थ्य होनी चाहिये। इसके लिए यथोचित अभ्यास की आवश्यकता होती है। जब खिलाड़ी अभ्यास के फलस्वरूप एक बार इसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है; फिर उसके लिये कोई कठिनाई शेष नहीं रहती।

प्रतिरक्षा के समय लैफ्ट-हाफ का मुख्य कर्तव्य है, प्रतिपक्ष के आउट साइड राइट पर सतर्कतापूर्वक दृष्टि रखना। उस खिलाड़ी की स्थिति की रक्षा की जिम्मेदारी उसी पर होती है। प्रतिपक्षी इन साइड-राइट द्वारा अपने विंग खिलाड़ी को दिये गए 'पासों' में हस्तक्षेप करना, लैफ्ट हाफ खिलाड़ी के मुख्य कर्तव्यों में से एक है। प्रतिरक्षा में उसकी स्थिति प्रतिपक्षी आउट साइड राइट के समान होती है। प्रतिपक्षी इन साइड के 'पासों' में वह दो प्रकार से हस्तक्षेप कर सकता है—एक तो यह कि वह 'पास' देखते ही उसे रोकने के लिए दौड़े। दूसरा यह कि वह स्वयं को इन साइड खिलाड़ी और आउट साइड राइट के बीच ले आए। इस स्थिति में वह प्रतिपक्षी इन साइड राइट, लैफ्ट हाफ खिलाड़ी को उसके मूल स्थान से हटाने का प्रयत्न कर सकता है।

लैफ्ट हाफ को प्रयत्न यह करना चाहिए कि वह विपक्षी 'राईट इन' और राइट विंग के बीच के स्थान पर दृष्टि रखे। इस प्रकार वह विपक्षी फारवर्डों को रोक सकता है।

यह आवश्यक है कि लैफ्ट हाफ का संपर्क अपने लैफ्ट इन और लैफ्ट विंग के अन्य फारवर्डों से बराबर बना रहे लैफ्ट हाफ की सफलता इसी में है कि वह विपक्षी, दाएं बाज़ू के खिलाड़ियों को क्रास हिट न लगाने दें। आक्रमण के समय लैफ्ट-हाफ खिलाड़ी का मुख्य कर्तव्य है अपने आउट साइड-लैफ्ट और इन साइड-लैफ्ट की भरपूर सहायता करना। उसे जोरदार हिट नहीं लगानी चाहिए। उसके द्वारा लगाई गई 'हिट' प्राप्त-कर्ता के दाएं हाथ पर ही पहुंचनी चाहिए। हिट लगाते समय लैफ्ट-हाफ खिलाड़ी को यह ध्यान रखना होता है कि हिट करने पर गेंद उछले नहीं। यदि गेंद उछल जाती है तो उसे अच्छा 'पास' नहीं कहा जा सकता। यदि लैफ्ट-हाफ खिलाड़ी, प्रतिपक्षी राइट-हाफ खिलाड़ी को अपने साथ उलझा लेता है या उसे अपने स्थान से हटाने में सफल हो जाता है तो अपनी टीम के लिए उसकी यह चाल लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

यदि गेंद विपक्षी खिलाड़ी से साइड लाइन से बाहर चली जाती है, तो लैफ्ट हाफ का कार्य उसे 'रोल इन' करना अर्थात् मैदान में हाथ से लुढ़काना भी होता है।

सैंटर हाफ

सामान्य रूप से सैंटर हाफ खेलने वाला खिलाड़ी अधिक योग्य, अनुभवी, चतुर और साहसी होता है। उसे भी रक्षात्मक और आक्रमणात्मक खेल में निपुण होना आवश्यक है। उसका कर्तव्य, विरोधी सेंटर फारवर्ड के अतिरिक्त विपक्षी इनर्स को भी रोकना होता है। वह टीम के खिलाड़ियों में पारस्परिक तालमेल बिठाने में और प्रतिपक्ष पर आक्रमण करने में मुख्य भूमिका अदा करता है। अन्य खिलाड़ियों के प्रति उसका बहुत उत्तर-दायित्व है। स्थिति के अनुसार खेल का ज्ञान और प्रतिपक्षी वालों का पूर्वानुमान करना उसकी मुख्य विशेषताएं हैं। इन दोनों गुणों के होने पर वह स्थिति को दृष्टि में रखते हुए आक्रमण अथवा प्रतिरक्षा के समय अपने फारवर्ड और रक्षा-पंक्ति के खिलाड़ियों को सही तथा उपयोगी सहायता दे सकता है।

(क्रमशः)
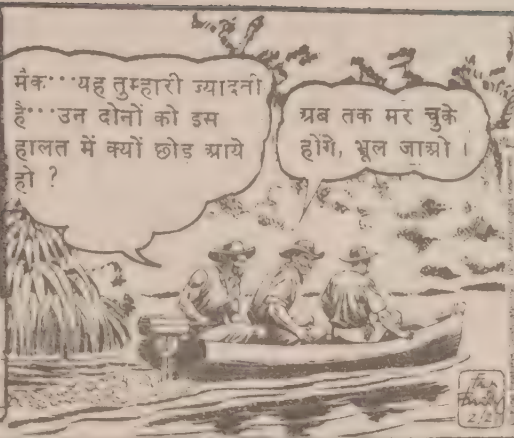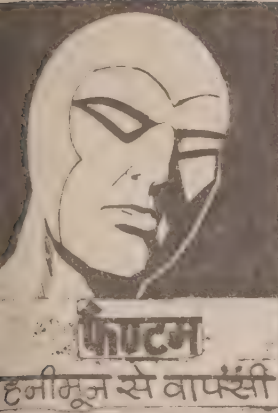
फैण्टम
हनीमून से वापसी
मैक···यह तुम्हारी ज्यादती है···उन दोनों को इस हालत में क्यों छोड़ आये हो ?
अब तक मर चुके होंगे, भूल जाओ ।
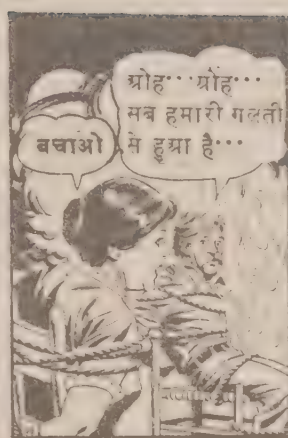
बचाओ
ओह···ओह···सब हमारी गलती से हुआ है···
जोई !
कड़क
फैण्टम !
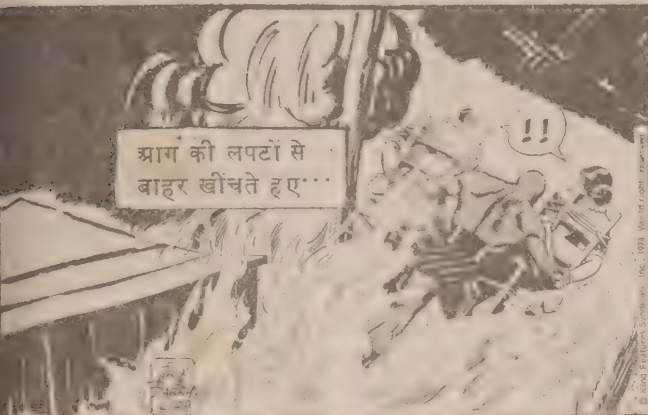
आग की लपटों से बाहर खींचते हुए···
!!
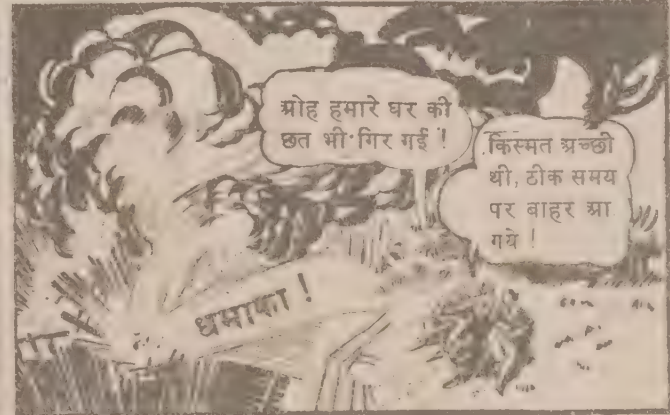
ओह हमारे घर की छत भी गिर गई !
किस्मत अच्छी थी, ठीक समय पर बाहर आ गये !
धमाका !

और चाहिये पानी ?
नहीं···धन्यवाद
शुक्र है पानी का कुआँ ही हमारा ऐसा था । जिसको वो जला नहीं सके ।
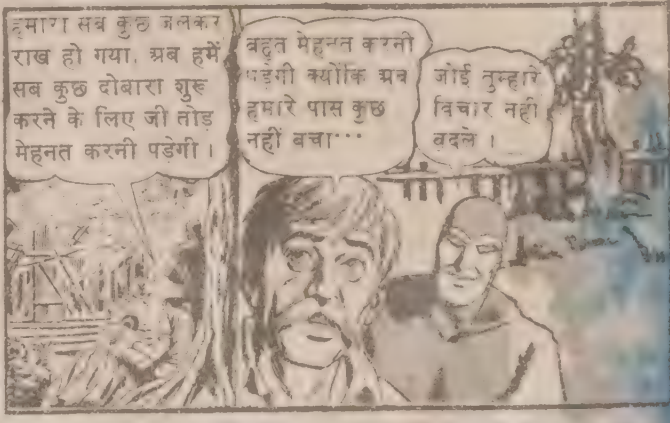
हमारा सब कुछ जलकर राख हो गया. अब हमें सब कुछ दोबारा शुरू करने के लिए जी तोड़ मेहनत करनी पड़ेगी ।
बहुत मेहनत करनी पड़ेगी क्योंकि अब हमारे पास कुछ नहीं बचा···
जोई तुम्हारे विचार नहीं बदले ।
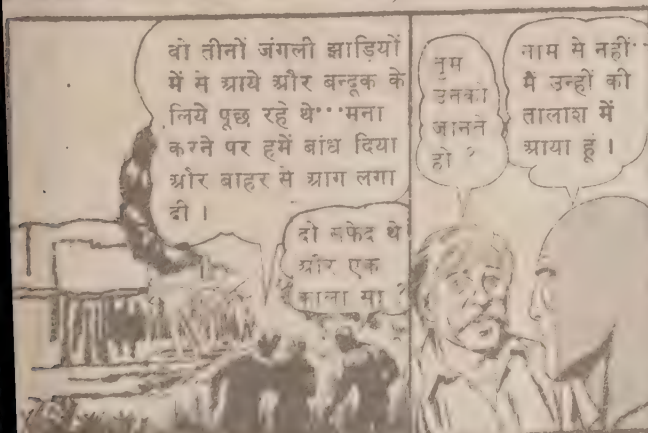
वो तीनों जंगली झाड़ियों में से आये और बन्दूक के लिये पूछ रहे थे···मना करने पर हमें बांध दिया और बाहर से आग लगा दी ।
दो सफेद थे और एक काला था ?
तुम उनको जानते हो ?
नाम से नहीं मैं उन्हीं की तालाश में आया हूं ।
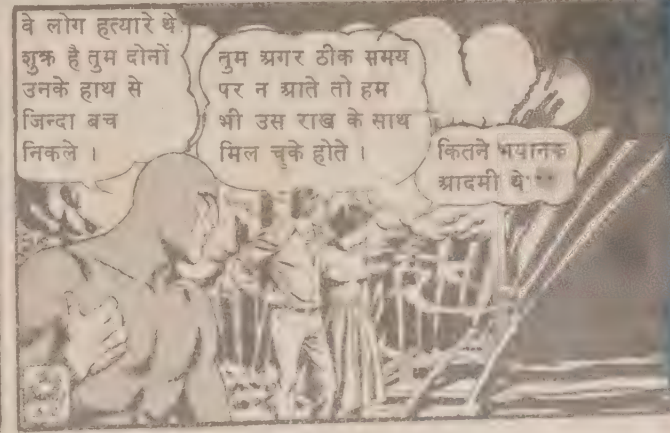
वे लोग हत्यारे थे शुक्र है तुम दोनों उनके हाथ से जिन्दा बच निकले ।
तुम अगर ठीक समय पर न आते तो हम भी उस राख के साथ मिल चुके होते ।
कितने भयानक आदमी थे···
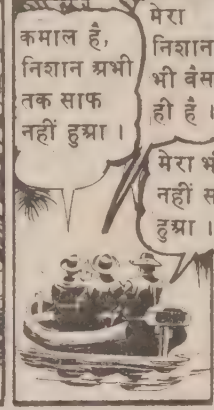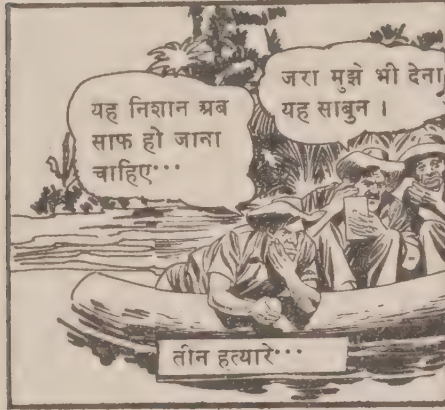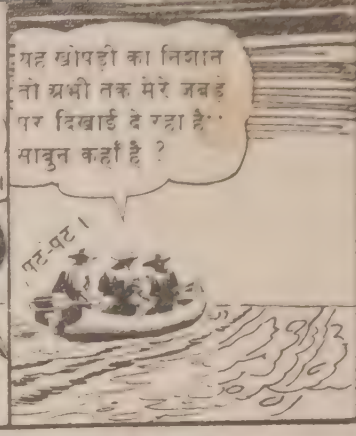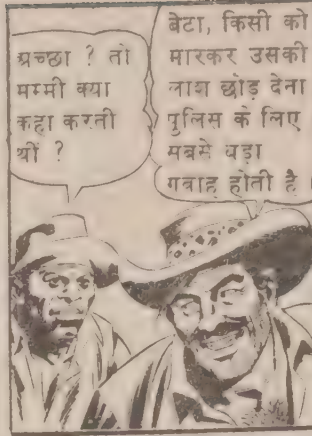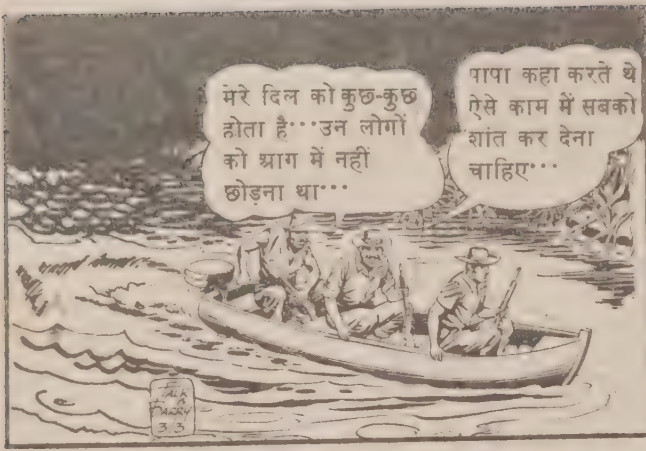
दीवाना वर्ग पहेली 10 रु० इनाम जीतिये

अन्तिम तिथि: ३०दिसम्बर १६६८

1	2	3		4
5			■	
6		■	7	
	■	8		
■	9			

संकेत

बायें से दायें

१. सैलानियों के स्वर्ग में एक जगह जहां सांप की लम्बाई का ही पता नहीं लगता ? (५)
५. कॉफी पीने का बर्तन और बन्दूक दोनों मिलकर धुन में मस्त हो जाते हैं ? (३)
६. फिल्म या धागे का चक्का। (२)
७. किस वक्त शेर का बच्चा अंग्रेजी में होता है। (२)
८. ताकतवर और मालदार प्रेमी ? (३)
६. सुन्दर बागीचे में फिल्म ? (४)

ऊपर से नीचे

१. पश्चिमी देश जिसमें पाकिस्तानी हिल स्टेशन है ? (४)
२. उल्टे लगन वाला शहर जहाँ नग्नता की बात होती है ? (३)
३. खिंचा हुआ शरीर। (२)
४. निर्धनों का खून करने वाला ! (५)
७. मुस्लिम धर्म प्रेमी इसे पढ़ते हैं ! (३)
८. कुर्बानी देने में ताकतवर ! (२)

तुकबन्दी प्रतियोगिता
इनाम ५ रु०

आप चार लाइनों की कविता या शेर गढ़ कर हमें भेजें। लाइनों की अन्तिम तुकबन्दी हम दे रहे हैं ! आपको बाकी के वाक्य रच कर कोई मजेदार शेर, कविता लिखनी है ! पूरी कविता, शेर का सम्बन्ध एक ही विषय घटना से हो—

—————————— मनमाना
—————————— समझाना
—————————— मस्ताना
—————————— दस्ताना

अन्तिम तिथि ३०दिसम्बर ६८
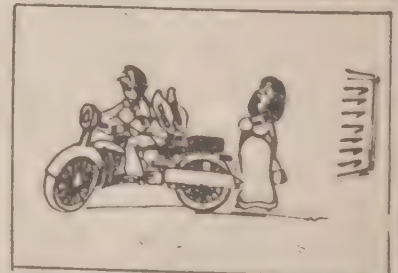
प्र० : गुफायें कैसे बनती हैं ?

मन्जूर हसन कादरी

उ० : गुफाओं का अस्तित्व मनुष्य के इतिहास के आदिकाल से बहुत रोचक ढंग से जुड़ा है । ये तो हम सब को ही पता है कि पाषाण युग के मानव ऋतुओं के प्रकोप से अपना बचाव गुफाओं में रह कर ही करते थे । गुफाओं के बारे में हमारे पूर्वज अजीब-अजीब बातें मानते थे।ग्रीन लोगों का विश्वास था कि गुफायें देवताओं के रहने के मन्दिर हैं तो रोमन इन्हें परियों इत्यादि के घर मानते थे, परशियन इन्हें पृथ्वी की आत्मा के पूजा स्थान से सम्बन्धित करते थे । भारत के भी बहुत बड़े ऋषि मुनियों के तप करने के स्थान पहाड़ों की गुफाओं को ही माना गया है ।

आजकल बड़ी-बड़ी गुफायें सैलानियों के आकर्षण का कारण बनी हुई हैं । गुफाएें बड़ी बड़ी पहाड़ी चट्टानों के भीतर खोखला स्थान होता है। बड़ी गुफाओं को केवरन्स कहते हैं ।

गुफाऐं कई प्रकार बन जाती हैं । कुछ गुफाऐं तो समुन्द्र की लहरों द्वारा लगातार पहाड़ों से टकराने के कारण बनती हैं । कुछ गुफायें धरती के नीचे पाई जाती हैं इनके बनने का मुख्य कारण धरती की सतह के नीचे बहने वाले पानी के झरनों के पुराने पथ होते हैं । ये पानी इन गुफाओं में चूने जैसी नरम चट्टानें छोड़ जाते हैं और धीरे-धीरे ये गुफाओं का रूप ले लेते हैं । गुफायें धरती के नीचे के भूकम्पीय हिलने-डुलने से बन जाती हैं या ज्वालामुखी के फटने से भी बन जाती हैं ।

अमरीका में पाई जाने वाली सबसे अधिक गुफायें चूने की मोटी तहों के छिजने से बनी हैं । चूना पानी में मौजूद कार्बनडाई-ऑक्साईड की प्रतिक्रिया के कारण ही अधिक छिजता है । इन्डाना तथा कैन्टुकी में चूने की मोटी तहें पाये जाने के कारण ऐसी गुफायें बहुत हैं । कुछ गुफाओं की छतों में छेद होते हैं, इन्हें सिंकहोल कहते हैं, ये छेद पृथ्वी की सतह के पानी के युगों तक इन स्थानों से रिसने के कारण बन गये होंगे । कुछ गुफाओं में गलियारे होते हैं जो मंजिलों में भी होते हैं । मंजिलें एक के ऊपर एक होती हैं । कुछ गुफाओं में पानी के झरने अब भी बहते पाये जाते हैं । इनमें उल्लेखनीय भारत में वैष्णो-देवी की गुफा है । अधिकतर स्थानों से पानी का झरना नीचे की सतह पर चला जाता है तथा पानी सूखने पर ये गुफा बन जाती है ।
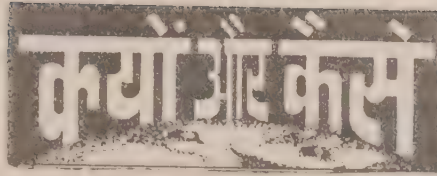
कई स्थानों पर चूने या किसी और धातु युक्त पानी के छतों से लगातार रिसने के कारण पानी के सूख जाने पर ये स्टेलेसाइट बन जाते हैं जो की गुफाओं की छतों से लटकती हैं, इनसे पानी के लगातार टपकते रहने पर खम्बें से भी बन जाते हैं । इसी प्रकार के बर्फ से बने शिवलिंग तथा अन्य स्टेलेसाइट अमरनाथ की गुफा में देखे जा सकते हैं ।

प्र० : स्कीईंग या बर्फ पर फिसल कर चलने के खेल का आरम्भ कब और कैसे हुआ ?

दीलिप कुमार, गया—बिहार

उ० : शायद आप सोचते होंगे की स्कीईंग कोई नवीन खेल है, परन्तु बर्फ पर फिसल कर एक जगह से दूसरी जगह जाना, मनुष्य की यात्रा करने के तरीकों में सबसे प्राचीन तरीका है । स्कीईंग शब्द का अर्थ है बर्फ के जूते अथवा लकड़ी का टुकड़ा, ये शब्द आइसलैंड की भाषा का है।कुछ इतिहासकारों का दावा है कि प्राचीन शिल्पकला के नमूनों में भी लोग स्कीज पहने देखे गये हैं । ईसाई धर्म के आरम्भ से पहले स्केनडेनेविया में लप्पस लोग फिसलने वाले कहलाते थे । इन लोगों ने अपनी एक स्की की देवी भी मानी हुई थी तथा उनके शीत कालीन देवता मुड़े पैरों वाले तथा स्कीज पहने हुए दिखाई दिये है ।

जो प्राचीन स्कीज रिकार्ड में उल्लिखित हैं वे लम्बी तथा मुड़ी हुई हैं । ये पशुओं की हड्डियों से बनी हुई होती थीं तथा पैरों में नसमें से बाँधे जाते थे ।

खेल के तौर पर स्कीईंग सबसे पहले नौर्वे देश के टेलीमार्क जिले में आरम्भ हुआ था । नौर्वे के मोरगीदल शहर को तो स्कीईंग का उद्गम या पालना कहा जाता है क्योंकि ये प्रदेश लम्बे अरसों के लिये बर्फ से ढक जाता है और यहां इधर-उधर जाने के लिये स्कीईंग का प्रयोग अति आवश्यक हो जाता है । यहाँ तक की शीत ऋतु में तो मिलने जुलने, बाजार या आस पास के गाँव इत्यादि जाने के लिये भी स्कीईंग पर ही निर्भर हो जाते हैं ।

इसी प्रकार स्कीईंग की प्रतियोगिताओं को आधुनिक युग की देन समझना भी सरासर गलत है । क्योंकि सन् १७६७ में भी नौर्वे में ऐसी इनामी प्रतियोगिता होती थीं । आधुनिक स्कीईंग के खेल का आरम्भ भी नौर्वे के मोरगी शहर के वासी श्री सोंडरे नोरहम ही ने किया था । वे बर्फ पर लम्बी छलांग लगाने के माहिर होने के साथ-साथ एक कुशल स्की बनाने वाले भी थे । ये अमरीका उनसठ वर्ष की आयु में आये थे तथा सन् १८९७ में अपनी मृत्यु तक अमरीका में स्कीईंग के विचित्र खेल को बढ़ाने में

योगदान देते रहे ।

स्कीइंग के इतिहास में सन् १८६८ को एक महत्वपूर्ण वर्ष माना गया है । इस वर्ष क्रिस्टेनिया नामक शहर में स्कीईंग की एक बहुत बड़ी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ था । इस प्रतियोगिता मे श्री सोडरे नोरहम को भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया गया था । इस प्रतियोगिता में श्री सोडरे बिना छड़ी की सहायता लिये बर्फ के एक ढलान पर दोनों पैर जोड़ कर इतनी सुन्दरता से कूदे थे की छलाँग के दौरान वे पक्षी के समान हवा में तैरते हुए नीचे पहुंचे । नीचे पहुंचने पर भी वो गिरे नहीं अपितु जरा सा घुटनों को मोड़ कर ही सीधे खड़े हो गये । इस अद्भुत कारनामे को देख कर लोग स्तब्ध रह गये तथा तभी से स्कीईंग के खेल को नया मोड़ मिला । अमरीका में भी सौ वर्ष पूर्व से ही शीतकाल में खानों के कैम्पो में पहुंचने के लिये स्कीज का ही सहारा लिया जाता रहा है ।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

आर० व्ही० त्यागी—इन्दौर : चाचा जी, क्या आपने कभी भूत देखा है ?

उ० : आप हमसे पूछ रहे हैं ? जनता पार्टी के सत्ता में आने के बाद क्या देश में कभी एक भी आदमी है जो यह कह सके कि उसने भूत नहीं देखा।

जगदीश लूथरा, चंद्र नगर—दिल्ली : चाचा जी, क्या मैंने यह सच सुना है चाची का पांव भारी है ?

उ० : पता नहीं आप क्या कहना चाहते हैं, चालीस साल पहले उनका पांव हमारी गरदन पर पड़ा था, सो आज तक तो हल्का हुआ नहीं। वैसे कई बार ऐसा होता है कि आदमी कहता कुछ है और सुनने वाला समझता कुछ और है। जैसे हमारे पड़ोस में एक चौधरी साहब रहते हैं। एक रोज वह सुबह उठे तो दहाड़ें मार-मार कर रोने लगे। चौधराइन ने पूछा, भले आदमी लोग सुबह-सुबह भगवान का नाम लेते हैं। तुम रो क्यों रहे हो ? इस पर चौधरी साहब बोले, भगवान मैं लुट गया, मेरी लुटिया डूब गई। मेरा बेड़ा गर्क हो गया। रात मैंने सपने में देखा है कि मैं रंडवा हो गया। इस पर चौधराइन ने चौधरी साहब के मुंह पर हाथ रखते हुये कहा, क्यों अशुभ बात मुंह से निकालते हो, तुम रंडवे क्यों होने लगे, भगवान करे मैं रांड हो जाऊं।

मुरलीधर बतरा—इन्दौर : चाचा जी, लव-मैरिज करने का कोई आसान सा ढंग बताइये।

उ० : हमारे सर की हालत देख कर पहले आप यह बताइये कि जितना आसान ढंग हम बतायेंगे क्या उस पर अमल करने की ताकत आप में है ?

इन्द्रपाल, सतपाल—शाहदरा, दिल्ली : मेरे अनुरोध पर क्या आप क्यों और कैसे बन्द कर सकते हैं। अगर आपने मेरे इस प्रश्न का उत्तर न दिया तो आगे से दीवाना आंखें बन्द करके पढ़ा करूंगा।

उ० : हमने पीछे से आंखें खोल कर यह पता लगाया है कि अधिकतर लोग इस स्तम्भ को पसन्द करते हैं। हमने इसे बन्द कर दिया तो हमें डर है कि लोग हमें "बन्द" न कर दें।

सुधीर श्रीवास्तव—मुजफ्फरपुर : चाचा जी, दिल अधिक जोर से कब धड़कता है ?

उ० : जब कोई दिल से दिल्लगी कर बैठे और दर्दे दिल दिलदार को दलदल में फंसा दे।

वजीर आलम सागरी—सागर : चाचा जी, आप अपनी शक्ल आईने में देख कर क्या सोचते हैं ?

उ० : एक ही बात, जिसे सोच कर अपने बनाने वाले पर हंसी आ जाती है :

सब हसीनों को खुदा ने खुद बनाया हाथ से,
हम ही हैं कम्बख्त जो ठेके पे घड़बाये गये।
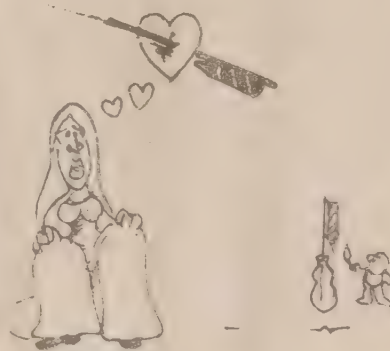
सिंघई सतीन्द्र जैन—जबेरा : चाचा जी, संगीत का असर हर इन्सान पर पड़ता है। बहादुरशाह जफर मार्ग चाहे छोटी सी गली ही हो, पर उनकी शायरी का असर तो आप पर जरूर पड़ा होगा।

उ० : कितना है बदनसीब, जफर दफन के लिये,
दो गज जमीन भी ना मिली कूए यार में,

इस शेर से शायद आपने गजों का हिसाब लगा कर बहादुरशाह जफर मार्ग को पतली और छोटी सी गली समझा है। पर वास्तविकता यह है सतीन्द्र जी कि बहादुरशाह जफर मार्ग जैसे लम्बे चौड़े और शानदार मार्ग दिल्ली में बहुत कम हैं। देश की किस्मत के बड़े-बड़े फैसले आज यहीं होते हैं। और जफर का जो असर हम पर हुआ है, उसके लिये जफर ने कहा है :

तुमने किया न याद कभी भूल कर हमें,
हमने तुम्हारी याद में सब को भुला दिया।

विजय कुमार गुप्ता,—श्रीगंगानगर : कृपया दीवाना की पृष्ठ संख्या बढ़ा दें, चाहे मूल्य भी एक रुपये की बजाये एक रुपया पच्चीस पैसे कर दें ?

उ० : आप का सुझाव विचाराधीन है इसके साथ ही इस विषय पर हम दूसरे पाठकों की राय भी जानना चाहते हैं।

श्याम लाल नागपाल—कोठी गेट, कैथल : चाचा जी, क्या आप बता सकते हैं कि फिल्म खामोशी में क्या धर्मेन्द्र का भी कोई छोटा सा रोल था ?

उ० : जी हां, 'तुम पुकार लो।' वाला गाना गाते समय धर्मेन्द्र ही की पीठ का सीन दिखाया गया है।

राकेश-अमृतसर : एक शेर सुनिये चाचा जी :

बुतो, शाबाश दुनियां में, तरक्की इसको कहते हैं।
न तरशे थे तो पत्थर थे जो तरशे तो खुदा निकले।

बताईये, यह शेर किसके लिए कहा गया है ?

उ० : आधा शेर आपकी चाची, यानि हमारी श्रीमती जी के लिये कहा गया है और आधा हेमा मालनी या जीनत अमान के लिये। कौन सा आधा किधर है, इसका हिसाब नीचे के शेर से लगा लीजिये :

क्या कोई कहे हकीकत कि वो क्या हैं ?
हाथ आये तो बुत, हाथ ना आये तो खुदा हैं।

नन्द किशोर—सहारनपुर : क्या आपके बाल एमर्जेंसी के दिनों में पुलिस इन्स्पेक्टर त्यागी ने काट दिये थे ?

उ० : जी नहीं, 'इन्सपेक्टर श्रीमति जी' की 'एमरजेंन्सियों' के कारण हमारे सर को त्यागने पड़े हैं।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास

मीठे बोल बोले पायलिया···

बन्द करो बकवास और जाकर फिलट लेकर आओ. मच्छरों ने टांगों पर काट-काट के बुरा हाल कर दिया है मेरा।

लागा चुनरी में दाग मिटाऊं कैसे···

बन्द करो बकवास, जितने मर्जी दाग लग जाएं तुम्हारी चुनरी में। मैं नयी लेकर देने वाला नहीं हूं।

मैं तेरे दर पे आया हूँ कुछ करके जाऊंगा

बन्द करो बकवास, माना कि मेरे कुत्ते ने तुम्हारे घर के सामने टट्टी कर दी थी। इसका यह ममलब नहीं कि तुम भी······

पृष्ठ भूमि
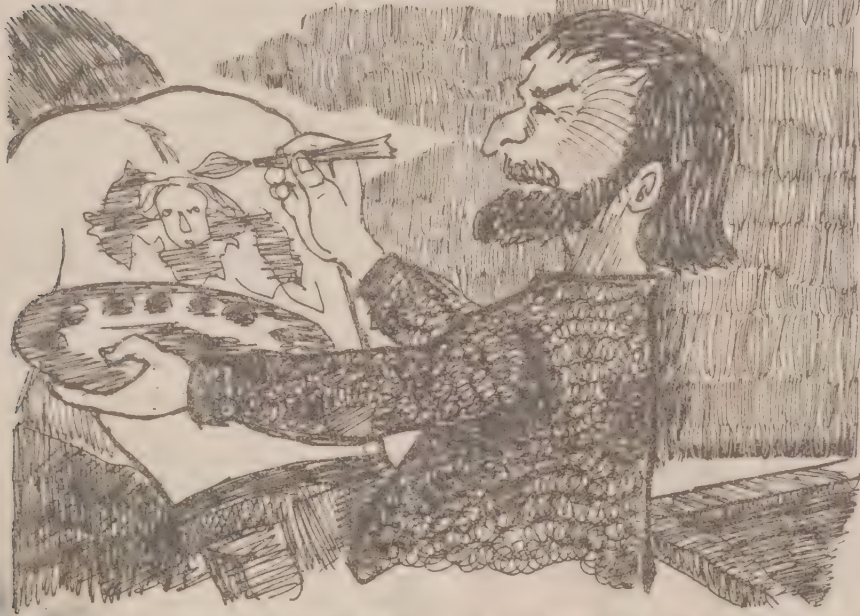
—एच० एच० मनरो 'साकी'

क्लोविस ने अपने पत्रकार मित्र से कहा, "भाई, वह वृद्ध महिला तो कला के बारे में बहुत निरर्थक और ऊल-जलूल बातें करती है। शायद उसे कला का खब्त हो गया है। जब देखो किसी न किसी चित्र के बारे में कुछ न कुछ कहती रहती है। 'यह चित्र बहुत बढ़िया है।' 'इस चित्र में यह दोष है।' आदि-आदि। वह चित्रों के बारे में ऐसे बात करती है जैसे कोई मूंगफ़ली के बारे में बात करता है।"

'यह सुनकर तो मुझे हेनरी देपलेस का किस्सा याद हो आया,' पत्रकार कहने लगा, 'यह वृत्तान्त मैंने तुम्हें पहले तो नहीं सुनाया ?'

'नहीं भाई, मुझे तो नहीं सुनाया,' क्लोविस ने कहा।

'तो सुनो। हेनरी देपलेस, जिसका किस्सा में तुम्हें सुना रहा हूं, जन्म से ग्रेण्ड डची, लक्समबर्ग, का रहने वाला था। जब वह जवान हो गया तो वह किसी कम्पनी का एजेन्ट बन गया। साधारणतया वह कार्यवश ग्रेण्ड डची से बाहर ही रहता था। एक बार वह उत्तरी इटली के एक छोटे-से शहर में ठहरा हुआ था। उसे वहाँ समाचार मिला कि उसका कोई दूर का रिश्तेदार मर गया है। और उसके लिए उत्तराधिकार रूप में कुछ पूंजी छोड़ गया है।

यह पूंजी इतनी बड़ी नहीं थी कि हेनरी चौंक उठता। मगर वह सोचने लगा कि वह पूंजी किसी ऐसे काम में लगा दे जिससे कुछ मनोरंजन हो। उसे यह परामर्श बहुत अच्छा लगा कि वह स्थानीय कलाकार सिनोर ऐण्डरे पिनसिनी को आश्रय दे और सहायता करे। सिनोर पिनसिनी उस समय कला के क्षेत्र में सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति था। इटली में उसकी टक्कर का कोई दूसरा कलाकार नहीं था। त्वचा को गोदने की कला में वह दक्ष था। पर वह बहुत गरीब था और कष्ट में था।

हेनरी ने ऐण्डरे पिनसिनी से बातचीत की। कलाकार छः सौ फ्रांक पर हेनरी की पीठ गोदने को तैयार हो गया। उसने हेनरी की पीठ पर गरदन की हड्डी से लेकर कमर के घेरे तक एक सुन्दर झरना गोदने का वचन दे दिया। चित्र जब बनकर तैयार हो गया तो हेनरी को कुछ निराशा हुई। बात यह हुई कि उसे कुछ यूं ही सन्देह हो गया। पर कलाकार की कार्य-कुशलता पर उसने पूरा सन्तोष प्रकट किया। जब चित्र कुछ कला-प्रेमियों को दिखाया गया तो उन्होंने मुक्त-कण्ठ से उसकी प्रशंसा की और कहने लगे—यह चित्र तो ऐण्डरे पिनसिनी की कला का सर्वश्रेष्ठ नमूना है।

सबने यही कहा कि यह उसका उच्च कोटि का चित्र है और इसके बाद उसे कोई चित्र बनाने की आवश्यकता नहीं। पर दुर्भाग्य का मारा कलाकार अपने परिश्रम का फल न भोग सका। वह प्रसिद्ध कलाकार भगवान को प्यारा हो गया। उसे कब्र में लिटा दिया गया। कला का पुजारी इस संसार से उठ गया। उसके पीछे उसकी पत्नी रह गई, जिसे हेनरी को छः सौ फ्रांक देने चाहिये थे। पर उसके तुरन्त पश्चात् हेनरी देपलेस के जीवन में संकट पर संकट आने शुरू हो गए। उत्तराधिकार में जो पूंजी प्राप्त हुई थी उसी के बल-बूते पर उसका यह सारा कला-प्रेम जागा था, अब बहुत कम रह गई थी। कुछ तो शराब ले गई, कुछ दूसरे छोटे-मोटे खर्चों से घट-घटा कर कुल चार सौ तीस फ्रांक शेष रह गए। यह पूंजी वह स्वर्गवासी कलाकार की पत्नी को देने के लिए ले गया। कलाकार पिनसिनी की पत्नी इतने कम पैसे देखकर बहुत अप्रसन्न हुई। उसने हेनरी को बहुत सुनाई। उसकी अप्रसन्नता का कारण यही नहीं था कि हेनरी इतनी कम रकम दे रहा है। वह इस बात से अधिक दुःखी थी कि उसके स्वर्गवासी पति की अन्तिम श्रेष्ठ कलाकृति का मूल्य घटाया जा रहा है।

पर एक सप्ताह बाद हेनरी के पास केवल चार सौ पांच फ्रांक रह गए। इस पर कलाकार की पत्नी जल-भुनकर राख हो गई। उसने न सोचा न समझा। कहने लगी मैं हेनरी के हाथ वह चित्र कदापि नहीं बेचूंगी। कुछ समय बाद हेनरी को समाचार मिला कि कलाकार की पत्नी ने वह चित्र स्थानीय नगरपालिका को भेंट कर दिया है। नगरपालिका ने भी वह उपहार खुशी से स्वीकार कर लिया।

यह सुनकर हेनरी बहुत परेशानी की अवस्था में वह स्थान छोड़कर रोम भाग गया। वह सोचने लगा कि रोम में उसे कोई नहीं पहचान सकेगा। वहां उस कला

शेष पृष्ठ ३६ पर

मदहोश
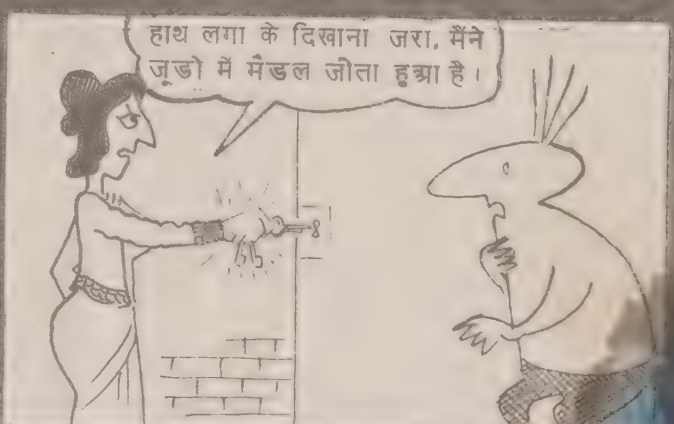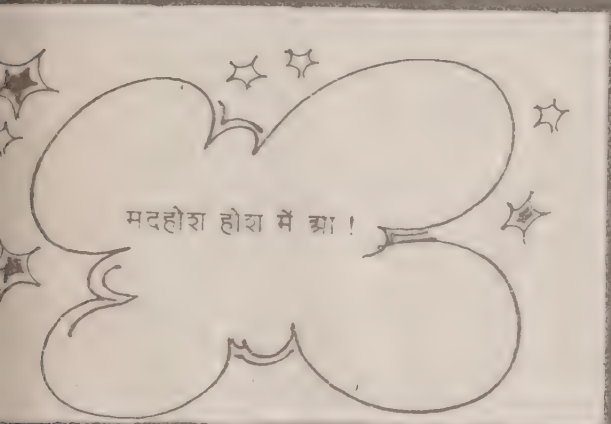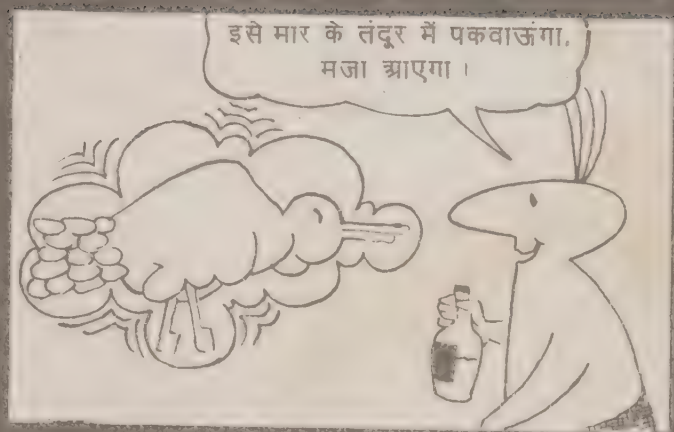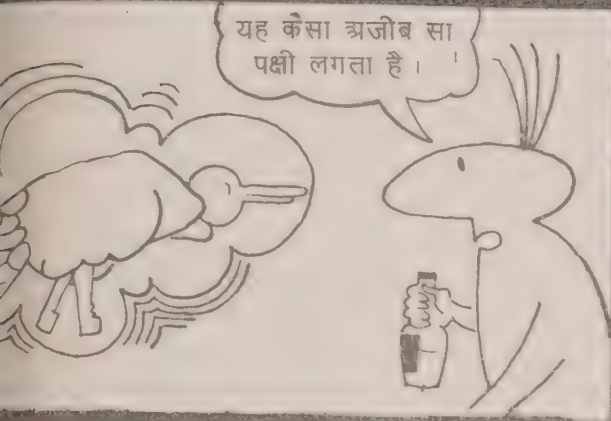
दीवाना कैमल रंग भरो
तियोगिता-५ का परिणाम

न पुरस्कार—राजकुमार सुपुत्र श्री मोती द्वारा श्री मदन लाल, पंजाब नेशनल बंगाली मार्केट, नई दिल्ली-११०००१।

ीय पुरस्कार—योगेन्द्र उप्रेती द्वारा श्री दत्त उप्रेती, तराई विकास सहकारी लि०, रुद्रपुर (नैनीताल)

य पुरस्कार—सरस कमल भारती, '१०, संगम पार्क, जी० टी० रोड, ी-११०००७

न आश्वासन पुरस्कार—१. जोगिन्दर रैनू, ६ ए/१, नित्यानन्द बाग, मुहाल चैम्बूर, बम्बई-४०००७४। २. राजीव र, म० नं० ६२६, सेक्टर ६, आर. के. , नई दिल्ली-११००२२। ३. सुषमा द्वारा श्री जी० लाल, एक्जीक्यूटिव नियर, सी. पी. डब्ल यू. डी., पटना शन डिवीजन, पटना-१। ४. सीमा अग्रवाल ४८/३, दक्षिणी कमार पुरकार, अगरतल्ला, त्रिपुरा। ५. नदीम खान द्वारा अनवर खान एम. एल. ए., मालेर कोटला (पंजाब)।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार—१. शिरिस कृष्ण खरेल द्वारा मोहन कृष्ण खरेल, राज-विराज (सप्तरी) नेपाल। २. राजेश भाटिया द्वारा श्री डी. आर. भाटिया, भाटिया बिल्डिंग, आनन्दपुरी मेरठ शहर। ३. सैयद जैनूल मुस्तफा रिजवी, ५८८, दरियाबाद इलाहाबाद-३। ४. श्री शरतचन्द्र बायन द्वारा कनक लाल बायन भरलुमुख, शलिपुर, ए. टी. रोड, गुहाटी। ५. राकेश ऐमा, म. नं० २४ काराफाली मोहल्ला, श्रीनगर।

सर्टिफिकेट—१. गुलबाश डुग्गल-नई दिल्ली २. अरुन मेहता-दिल्ली, ३. सराजुदीन रंग-रेज-कलकत्ता। ४. सादिया हबीब, गाजीपुर ५. संजीव कुमार-पटना। ६. अरुण शुक्ल-गोरखपुर। ७. कुमार आनन्द अग्रवाल-सागर (म. प्र.)। ८. आनन्द मोर-कलकत्ता। ६. अनुरज सिंह भुल्लर-मोगा। १०. गुनराज सिंह-जालन्धर।

अंक नं० ३८ में प्रकाशित वर्ग पहेली का परिणाम

च	ह	ल	प	ह	ला
क		ट	न		डी
ला	म		प	रा	ई
बे	त	वा		स	
ल		पि	ल		ला
न	फी	स		शो	ला

विजेताओं के नाम:-
1. पृथ्वीराज शर्मा- माल रोड, सोलन।
२. शरत कुमार घई - लुधियाना।
३. दिलीप कुमार जैन - सागर (म.प्र.)
४. विकास खन्ना - दिल्ली।

अंक नं० ३६ में प्रकाशित गुमनाम का परिणाम

विजेता:-
विकास लूथरा - नई दिल्ली-२२

कलाकारों के नाम:
आगा और रीना राय

दीवानी बात:- अरे ओ दरोगाजी, अब हाथ में डंडा रखने की बजाये यह चूड़ियां पहन लो।

पृष्ठ ३४ का शेष

कार द्वारा बनाए गए चित्र के वृत्तान्त को कौन जानता होगा।

पर उसकी पीठ पर स्वर्गवासी कलाकार की प्रतिभा का भारी बोझ था। एक दिन वह भाप के स्नानगृह में कपड़े उतार कर नहाने को घुसा। स्नानगृह के मालिक ने जो उत्तरी इटली का रहने वाला था, लपक कर उसके ऊपर कपड़ा डाल दिया और बहुत बिगड़कर कहने लगा—यह कलाकृति बरगामो नगरपालिका की सम्पत्ति है और उसकी आज्ञा के बिना इसके प्रदर्शन पर मुझे भारी आपत्ति है।

इसके फलस्वरूप यह समाचार आग की तरह सारे शहर में फैल गया। इस ओर जनता की रुचि बढ़ गई और राज्य सरकार की ओर से उस पर कड़ी दृष्टि रखी जाने लगी। उसे गर्म से गर्म दोपहर को भी समुद्र में नंगी पीठ नहाने से मना कर दिया गया। यदि वह नहाना चाहे तो उसे नहाने के मोटे-मोटे कपड़े अपनी पीठ पर बांधने पड़ते थे। इसके बाद बरगामो नगरपालिका के अधिकारियों ने आज्ञा निकाली कि समुद्र का खारा पानी कलाकृति को बहुत हानि पहुंचा सकता है। स्थानीय सरकार ने भी आज्ञा निकाल दी जिसके अनुसार एजेण्ट हेनरी को सूचना दी गई कि वह किसी समय भी समुद्र के जल में स्नान नहीं कर सकता। हेनरी पहले ही तंग था, अब तो उसका जीना भी दूभर हो गया।

एक बार उसे अपनी कम्पनी से पास वाले राज्य में यात्रा करने की आज्ञा मिली। उसने अपनी कम्पनी का कोटिशः धन्यवाद किया। अब वह शान्तिपूर्वक वहां जाकर रहेगा। पर उसकी सारी प्रसन्नता सहसा समाप्त हो गई। फ्रांक और इटली की सीमा पर उसे रोक लिया गया। उस पर पुनः निराशा छा गई। कुछ सरकारी अधिकारियों ने उस पर सीमा से बाहर जाने पर रोकथाम लगा दी। उसे बताया गया कि इटली के कानून के अनुसार वहां की कोई कलाकृति सीमा से पार नहीं जा सकती। उसे धमकी दे दी गई कि यदि उसने सीमा लांघकर भागने का प्रयत्न किया तो उसे गोली से उड़ा दिया जाएगा।

यह बात लक्समबर्ग सरकार को भी मालूम हो गई। इस पर लक्समबर्ग और इटली की सरकारों में अपने-अपने राजदूतों द्वारा बातचीत आरम्भ हो गई। एक बार तो ऐसा लगा जैसे सारे योरुप पर संकट के बादल छा जाएंगे। इटली की सरकार अपनी आज्ञा पर डटी हुई थी। उसने हेनरी देपलेस का व्यक्तिगत अस्तित्व मानने से इन्कार कर दिया। उसने यह भी नहीं माना कि वह एक एजेण्ट है। उसके भविष्य अथवा भाग्य के बारे में कुछ भी विचार करने पर वहां की सरकार ने इन्कार कर दिया। इटली की सरकार इस निर्णय पर अटल थी कि स्वर्गवासी पिनासिनी की कलाकृति, जो इस समय बरगामो नगरपालिका की सम्पत्ति है, देश से बाहर नहीं जा सकती। हम उसे कदापि अपने देश से बाहर नहीं भेजेंगे।

धीरे-धीरे दोनों राज्यों की उत्तेजना समाप्त हो गई। हेनरी देपलेस भी तंग आकर चुप होकर बैठ गया। पर दुर्भाग्य से कुछ महीनों बाद वह फिर एक भारी वाद-विवाद और झगड़े का विषय बन गया। जर्मनी का एक कला-विशेषज्ञ घूमता-घामता वहां आ पहुंचा। उसने बरगामो नगरपालिका से उस कलाकृति को देखने को आज्ञा प्राप्त कर ली थी। कलाकृति के निरीक्षण के बाद उसने अपना विचार प्रकट किया कि यह कलाकृति झूठी है और कलाकार पिनासिनी की नहीं है। हो सकता है कि यह कलाकृति पिनासिनी के किसी शिष्य द्वारा बनाई गई हो, जिसे उसने अन्तिम दिनों में नौकर रख लिया हो।

इस विषय पर स्वयं हेनरी की गवाही का कुछ मूल्य नहीं था, क्योंकि जब उसकी पीठ गोदी जा रही थी तो उसे नशीली वस्तुएं खिलाकर बेहोश कर दिया था। इटली की एक पत्रिका के सम्पादक ने जर्मन विशेषज्ञ के निर्णय का खण्डन किया। उसने यह सिद्ध कर दिया कि उस जर्मन विशेषज्ञ का व्यक्तिगत जीवन बहुत अनैतिक है और वह चरित्र-भ्रष्ट है। इस बात का इतना प्रचार किया गया कि इटली और जर्मनी की सरकारों में भी कहा-सुनी शुरू हो गयी और एक बार फिर सारे योरुप की शान्ति भंग होने का भय उत्पन्न हो गया। यहां तक कि स्पेन की लोक-सभा में जूते चल गए और वाद-विवाद चल पड़े। कोपेनहेगन विश्व-विद्यालय ने उस जर्मन विशेषज्ञ को उसकी इस गवेषणा पर स्वर्णपदक इनाम दे दिया (यद्यपि उन्होंने सच्चाई का पता लगाने के लिए कमीशन बाद में भेजा)। पेरिस के नवयुवकों ने आत्महत्या कर ली ताकि वे संसार को बता सकें कि उनकी इस क[…] कृति के बारे में क्या राय थी।

सारांश यह कि बेचारा हेनरी अ[…] परिस्थितियों से तंग आकर, इस सब लड़[…] झगड़े को देखकर, इटली के क्रान्तिकारी […] का सदस्य बन गया। उसकी गिनती दे[…] द्रोहियों में होने लगी। अपने जीवन में च[…] बार उसे एक भयंकर विदेशी घोषित […] देश-निकाले के लिए सीमा तक ले ज[…] गया। किन्तु उसकी पीठ पर पिनसिनी […] वह कलाकृति थी, इसलिए उसे हर […] लौटा कर लाया गया। एक बार जे[…] में क्रान्तिकारियों के एक साथी ने, व[…] विवाद के बीच में, हेनरी की पीठ […] तेजाब से भरी बोतल दे मारी। हेनरी […] लाल कमीज पहने था जिसने तेजाब […] प्रभाव को कम करने में सहायता की। […] भी कलाकृति मिट-मिटाकर पहचानने […] योग्य न रही। उस आक्रमणकारी स[…] पर हर ओर से गालियां पड़ने लगीं। दे[…] अमूल्य पदार्थ को नष्ट करने के अप[…] में उसे सात वर्ष के कड़े कारावास का […] दिया गया। ज्योंही हेनरी का अस्पता[…] छुटकारा हुआ, उसे राज्य सरकार द्वारा […] अवाञ्छित व्यक्ति तथा भयंकर विदेशी […] के अपराध में इटली की सीमा से […] निकाल दिया गया।

भाई, अगर तुम्हें फ्रांस जाने का अ[…] प्राप्त हो, तो फ्रांस की शान्त गलियों में […] विशेषतया ललित-कला मंत्रालय के अ[…] पास तुम्हें एक निराश, चिन्तित और व्या[…] व्यक्ति घूमता-फिरता मिलेगा। यदि दि[…] समय वहां जाओ और तुम्हें उससे बात[…] करने का अवसर मिले तो वह तुमसे वि[…] लक्समबर्गी लहजे में बातचीत करेगा।

उसे भ्रम है कि उसकी पीठ पर […] भी कला का सर्वश्रेष्ठ और अद्भुत नमूना […] उसे अब भी आशा है कि फ्रांस सरका[…] यदि कोई सिफारिश कर दे, तो हो सक[…] कि वह कलाकृति समझकर खरीद […] जाए। अब वह इसी अवस्था में घूमता […] है। मेरे विचार में केवल इस बा[…] अतिरिक्त उसका मस्तिष्क ठीक-ठाक है।

सवाल यह है..?

क्या इसका भी कोई जबाव है ?

पृष्ठ ९३ से आगे

कोई अन्तर नहीं मानता ।'

'मैंने एक कहानी लिखी है !' मधु ने बात बदलते हुए कहा ।

'लाओ देखें !'

'ले लीजिएगा ! घर पर आराम से पढ़िएगा !'

'इसका कुछ पारिश्रमिक दोगी ?'

'काहे का पारिश्रमिक ?' मधु ने त्यौरी चढ़ा कर कहा ।

'तुम्हारी लिखी कहानी पढ़ूंगा । उसकी गलतियां ठीक करूंगा । समय खर्च होगा । दिमाग खर्च होगा ।'

'क्या पारिश्रमिक चाहिए ?'

'यही कुछ खातिरदारी, खाना-पीना !'

मधु ने उठ कर एक छोटी-सी अलमारी खोली । उसमें से एक मर्तबान निकाला जिसमें मुरब्बा था ।

'बहुत शानदार मुरब्बा बनाया है । लेकिन एक काम और है ।'

'वह क्या ?'

'कल कालेज में फंक्शन है । मेरी सहेली का भाई सेक्रेटरी है । उसने एक भाषण लिखा है जिसे वह पढ़ेगा । उसे भी ठीक कर दीजिए !'

'लाओ !' मुरब्बे का टुकड़ा उठाकर

सुशील बोला, 'भाषण लिखा जाता है या दिया जाता है !'

'भाषण पढ़ा जाएगा !' मधु कुछ झुंझला गई । 'आपको ठीक करना हो, कीजिए वरना साफ मना कर दीजिए !'

'नाराज क्यों होती हो ? अभी ठीक किए देता हूँ ।'

भाषण अंग्रेजी में लिखा था । लिखावट रंजन की थी ।

'तुम्हारी सहेली के भाई का क्या नाम है ?'

'प्रभाकर !'

'वह तो बहुत प्रसिद्ध आदमी हैं ।'

'बिल्कुल डफर है । मेरी सहेली का नाम कमल है । एक बार उसके घर काम से गयी थी, तब उन्हें देखा था । पैसे वाले आदमी हैं । आशिक-मिजाज हैं । यह भाषण उन्होंने किसी दूसरे से लिखवाया है । कह रहे थे अच्छा नहीं लिखा है । कोई इसे ठीक कर देता । कमल ने कहा कि मैं मधु के मास्टर साहब से करवा दूंगी ।'

'क्या तुमने कमल को मेरे बारे में बताया था ?'

'मेरी चार-पाँच घनिष्ठ सहेलिया हैं । उन्होंने आपको देखा है । कमल को मैंने आपका नाम नहीं बताया है क्योंकि वह बात का बतगड़ बना देती है । पुरुषों को मित्र बनाने की बड़ी इच्छुक रहती है । मिलते ही बेतकल्लुफ हो जाती है । यों समझ लीजिए कि चिपट जाती है । इसलिए मैंने आपके बारे में उसे सब कुछ गलत बताया ।'

'जैसे ?'

'मैंने बताया है कि आप रिटायर्ड मास्टर हैं अंग्रेजी के । चौहत्तर-पिचहत्तर की उम्र है । बहुत ही बदमिजाज हैं । लेकिन काबिल बहुत हैं । उसने अपने भाई से भी यही कहा होगा । भाई जमींदार हैं । उन्होंने एक तीर से दो शिकार करने चाहे । पहले तो मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की जब इस काम में सफलता न मिली, तो यह काम बता दिया ।'

'क्या तुम रूढ़ियों को पसन्द करती हो ?'

'मैं देहाती लड़की हूं । मेरे लिए यही क्या कम है कि बाहर निकलती हूं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हर एक से दोस्ती करती फिरूं । अगर आप इसे रूढ़िवाद कहते हैं तो मुझे यह पसन्द है ।'

'तुम उस आदमी की इतनी बुराई कर रही हो और मुझसे उसका काम भी कराना चाहती हो ।'

'उसकी बुराइयां उसके साथ । सहेली का भाई है इसलिए मैं उसे भाई ही समझती हूं ।'

'तुम जानो । यह बताओ कि मुझे क्या करना है । यह भाषण तो बहुत ही अच्छा लिखा है । मैं इससे अच्छे दो वाक्य भी नहीं लिख सकता ।'

'कहीं-कहीं ठीक कर दीजिए । या कुछ इधर-उधर, अदल-बदल कर दीजिए ना
मेरी बात बनी रहे ।'

सुशील ने भाषण पढ़ा । उसके मस्ति
में एक विचार कौंध उठा । दो-चार वा
बदले । कुछ शब्द बदल दिये और का
मधु की ओर बढ़ाते हुए बोला—

'यह लो ! तुम्हारी आज्ञा का पा
कर दिया । अब मैं चलता हूं ।'

'आपको किस जबान से धन्यवाद दू

'उसी से जो कैंची की तरह चला कर
है ।' सुशील ने उसके कन्धे पर हाथ रख
कहा, 'अच्छा, अब मैं चलूं ।'

'यह वाक्य कितनी बार दोहराइएगा

'सच बात यह है कि तुम्हारे पास आ
के बाद जाने को जी नहीं करता । आल
हो जाता है । जी चाहता है कि तुम्हें देख
रहूं और तुमसे बातें करता रहूं ।'

'जी नहीं ! अब आप तशरीफ
जाइए । मेरी कहानी ठीक करके
आइएगा । कालेज में दे दीजिएगा ।'

'अच्छी बात है,' सुशील बोला
दरवाजे की ओर बढ़ गया ।

दरवाजे के पास पहुंचकर
पत्र उसे देने की सुशील को याद आ
मुड़कर वह बोला, 'मैंने तुम्हारे नाम एक
लिखा था, पढ़ लेना । उत्तर देने
आवश्यकता नहीं है । अगर इस पत्र के
में कभी कोई बात की तो दोस्ती खत
सुशील ने एक लिफाफा मधु की ओर
दिया और तेजी से बाहर निकल गया ।

मधु उस लिफाफे को देखती हुई
बड़ाई—

'हे भगवान ! कौन-सी ऐसी बात
जो आप मुझसे कह नहीं सकते थे ।
लिखने की ऐसी क्या जरूरत पड़ गयी ?

उसने लिफाफा खोला तो उसमें दस
के पांच नोट थे । किसी कारण सहित
कागज था, जिस पर लिखा था—

'तुम उल्लू हो । ये रुपये बच गए
तुम्हारे सिवाय और किसको दूं । जो
चाहे, करना !'

मधु के होंठों पर अनायास ही
मासूम-सी प्यार-भरी मुस्कान नाच उ
उसने रुपए सावधानी से रख दिए
कागज पर लिखे वाक्य को देखने लगी,
उसे चूम लिया ।

कागज उठाकर उसने कई वाक्य

ग्रौर उन्हें काटती रही। फिर किताब उठाकर पढ़ने लगी। लेकिन उसके हर शब्द में सुशील का ही चेहरा नजर ग्रा रहा था।

सोने से पहले उसने उस कागज को फिर चूमा ग्रौर फिर सो गयी।

कालेज में इंग्लैंड के इतिहास के प्रोफेसर ग्राये हुए थे। उनके स्वागत में समारोह ग्रायोजित किया जा रहा था। इस समारोह में कविता, संगीत ग्रादि का कार्यक्रम था। लड़कों से चन्दा लेकर चाय, समोसे, फल ग्रौर मिठाई का प्रबन्ध किया गया था।

'इसे कहते हैं मियां की जूती मियां के सिर !' रंजन ने धीरे से सुशील से कहा, 'पहले टीचर लड़कों को पढ़ाते थे, ग्रब उनकी जेब काटते हैं।'

सुशील मुस्कराकर रह गया।

'इस समय तबियत बहुत ही झल्लाई हुई है। हम लोग स्कूल-कालेज या यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त करें। ग्रच्छे नागरिक बनकर राष्ट्र की सेवा कर सकें। लेकिन यहां ग्राते ही हमारी जेब पर हमला होने लगता है। एडमिशन फीस, पढ़ाई की फीस, डेलीगेट की फीस, खेलने की फीस ग्रौर लाइब्रेरी की फीस, पंखे की फीस, लाइट की फीस ग्रौर फिर इम्तिहान की फीस !'

'मैं भी यही सोचता हूं कि पुराने जमाने की वेश्यायें ग्रौर ग्राज की शिक्षा संस्थाग्रों में क्या ग्रन्तर रह गया है ? वे भी वास्तव में बात-बात पर फीस मांगती थीं ग्रौर ये भी वैसा ही करते हैं।' सुशील मुस्कराकर बोला।

'इतने से ही छुटकारा मिल जाए तो भी गनीमत है। इसके बाद चन्दे शुरू हो जाते हैं। मैगजीन का चन्दा, एसोसिएशन का चन्दा, मेहमान बुलाने का चन्दा ग्रौर क्लर्क साहब हाजिरी बनाने का चन्दा लेते हैं।'

'रंजन भाई, हर जगह ऐसा नहीं होता ! यहीं है ऐसी अंधेरगर्दी।'

'मुझे तो सारा देश ही करप्ट दिखाई देता है। सारे देश में भ्रष्टाचार फैला हुग्रा है। डाकुग्रों की टोलियां देश भर में फैली हुई हैं जो लोगों की जेबों पर डाका डालती हैं ग्रौर फिर हर बार लूट लेने के बाद लुट जाने की मुबारकबाद देती हैं।'

तभी ढेर सारी लड़कियां हॉल में पहुंचीं। लोगों ने बात करना बन्द कर दिया।

उन्हीं लड़कियों में मधु भी थी। सुशील धड़कते दिल के साथ सारे लोगों की निगाहें देख रहा था। उन ढेर सारी लड़कियों में मधु कंकड़ों के बीच पुखराज की तरह दिखाई दे रही थी। हॉल में बैठे लैक्चरार ग्रौर प्रोफेसरों में से शायद ही कोई ऐसा था जिसके चेहरे पर दाढ़ी हो। ग्रगर दाढ़ी होती तो वह उसके सीने पर फड़क उठती। ग्रगर परहेजगार होता तो उसके दिल में कोहराम मच जाता। ग्रगर कहीं धार्मिक होता तो धर्म-कर्म भूल जाता। लेकिन वहां न कोई दाढ़ी वाला था, न परहेजदार ग्रौर न धार्मिक। बूढ़े चेहरों पर भी यह इच्छा जाग उठी कि यह लड़की उसके संरक्षण में क्यों नहीं है।

मधु के बदन पर सफेद चूड़ीदार पाजामा, सफेद कैम्ब्रिक का ढीला-ढाला कुर्त्ता ग्रौर सफेद मलमल का दुपट्टा था। उसके गले में दुपट्टा, स्कार्फ या मफलर की तरह नहीं पड़ा था, बल्कि उसके ग्रखरोटी बालों को ढकता हुग्रा उसके गले ग्रौर सीने को छिपाए हुए था। उसकी सुर्ख-सफेद रंगत, पतले, कमानीदार, कोमल तथा तराशे हुए सुलगते होंठ। ग्रांखें बड़ी-बड़ी नहीं थीं, लेकिन चमकीली बहुत थीं। इसके ग्रतिरिक्त उसके चेहरे पर ऐसा ग्राकर्षण था जिसे शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता।

सुशील को बौखलाहट हो रही थी। इसलिए ग्रौर भी कि रंजन की निगाहें मधु पर ही टिकी हुई थीं।

मधु के बराबर एक लड़की बैठी हुई थी जिसका रंग बिल्कुल काला था। चेहरे पर रत्ती भर ग्राकर्षण नहीं था। वह उस अंधेरी रात का काम दे रही थी जिसकी पृष्ठभूमि में चौदहवीं का चांद निकलता है।

भाषण होते रहे। कविता-पाठ होने लगा। दिलचस्प बात यह थी कि सम्माननीय ग्रतिथि भारतीय भाषा ग्रौर भारतीय भाषाग्रों से ग्रनभिज्ञ थे, लेकिन उन्हें हिन्दी-उर्दू की कवितायें ग्रौर गीत सुनाए जा रहे थे।

पाँच बजे फंक्शन समाप्त हुग्रा।

सुशील रंजन के साथ बाहर ग्राया तो रंजन ने मुस्कराकर कहा—

'तुमने कुछ ध्यान दिया ?'

'किस बारे में ?'

'ग्राज लड़कियों में एक…!'

'रंजन भाई !' सुशील ने बात काटी। 'मैं एक बहुत ही जरूरी बात कहना चाहता हूं। बहुत ही महत्वपूर्ण…!'

'क्या…?'

'ग्राइए, रास्ते में बात करेंगे। ग्राज ग्राप मेरी ग्रोर से चाय पियें !' सुशील बोला। वह बहुत ही सीरियस दिखाई दे रहा था।

'कुशल तो है ?'

'जी हाँ, कुशल तो है। ग्रगर नहीं है तो मेरी…।'

'क्या बात है ?' रंजन ग्राश्चर्य से उसकी ग्रोर देखने लगा।

'ग्राइए तो…!' सुशील रंजन का हाथ पकड़कर कार के पास ले गया।

जब कार चल पड़ी तो सुशील ने कहा—

'रंजन भाई, मुझसे एक भयंकर भूल हो गयी। मैं यह नहीं चाहता कि ग्राप मुझे क्षमा कर दें…। मैं चाहता हूं कि ग्राप मुझे सजा दें। ग्रगर ग्राप मुझे सजा देंगे नहीं तो जीवन भर मैं शर्मिन्दगी की ग्राग में जलता रहूंगा। मैंने ग्रापसे एक बात छिपायी है।'

'कुछ बताग्रोगे भी या केवल इधर-उधर की हांकते रहोगे ?'

'ग्राज से लगभग तीन साल पहले मैंने सिन्हा साहब की पत्नी शीला का ट्यूशन किया था। वहीं मैंने मधु को देखा ग्रौर फिर…हम लोग मिलते रहे। ये मुलाकातें धीरे-धीरे प्यार बन गयीं। ग्रौर ग्रब स्थिति यह है कि मैं ऐसा महसूस करता हूं कि मैं मधु के बिना जिन्दा नहीं रह सकूंगा।'

'कौन हैं ये देवी जी ?' रंजन मुस्कराकर बोला।

'वही लड़की जो दूसरी कतार में बैठी थी। सफेद कुर्त्ता तथा सफेद दुपट्टा पहने। मेरा विचार है, वही एक ऐसी लड़की थी जिस पर एक बार सभी की निगाहें उठ गई थीं ग्रौर शायद ग्राप भी उसी के बारे में पूछ रहे थे !'

रंजन चुप हो गया। पलभर के लिए उसके चेहरे पर विभिन्न रंग उभरे ग्रौर फिर मुस्कराहट नाच उठी। लेकिन कुछ बोला नहीं।

'ग्राप मुझे क्या सजा देंगे ?'

'किस बात की सजा ?'

'इस बात के छिपाने की सजा !' सुशील बोला, 'मेरी ग्रन्तरात्मा मुझे धिक्कार रही है। ग्रसल में मैंने डर के मारे यह बात नहीं बताई थी। मुझे डर था कि ग्राप बिगड़ेंगे।'

(शेष आगामी अंक में)

फिल्मी गी[...]
दुर्गत[...]

★ डाकिया डाक लाया, ड[...]
डाकिया डाक लाया···फि[...]
छांव में।
—डाकिया डाक नहीं ला[...]
चराएगा ?

★ न इज्जत की चिन्ता, [...]
मान की···फिल्म : बेईमा[...]
—सीधी तरह ही क्यों न[...]
'नेता' हूँ।

★ पंडित जी, मेरे मरने के[...]
रोटी, कपड़ा और मकान[...]
—डैथ सार्टिफिकेट ही [...]
लेंगे। पहले 'क्लीन बोल्ड'[...]

★ मिलती है जिन्दगी [...]
कभी······फिल्म : आंखें[...]
—गोया मुहब्बत न हुई स[...]
गई।

★ चल सन्यासी मन्दिर[...]
सन्यासी।
—मंदिर में नहीं तो क्या[...]
के अस्पताल जाएगा ?

★ तेरी दुनिया से दूर, च[...]
फिल्म : (अज्ञात)।
—जाने से पहले राशन-का[...]
जाइयेगा।

★ हाँ-हां मैंने शराब पी[...]
सीता और गीता।
—कोई फर्क नहीं पड़त[...]
पीजिए या इन्सानी पेशाब[...]
एक सी ही आएगी॥

बधाई
नीलमणि 'नगीना'

लोगों ने कहा उन से
देकर उन्हें बधाई
किस्मत वाले हैं आप,
वे चौंके !
और लगे हृदय में सोचने
मैं तो लुढ़क रहा हूं इधर से उधर
बे-पेंदी के लोटे की तरह
पार्टियों के बीच
मैं तो स्वयं नहीं जानता,
(किस) मत वाला हूं मैं ?
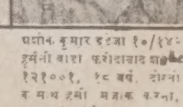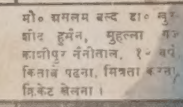
साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

१४ दिसम्बर से २० दिसम्बर ७८ तक

मेष : यह सप्ताह मिले जुले फलों से युक्त है, कारोबार की स्थिति संतोषजनक परन्तु धन लाभ कुछ देर से या आशा से कम मिलेगा, यात्रा में सुख, सेहत को संभाले रखें, कोई विशेष सूचना मिलेगी।

वृष : प्रयास करते रहें सफलता भी मिल जावेगी, संघर्षपूर्ण हालात बने रहेंगे और कुछ अप्रिय घटनाएं भी देखने में आएंगी, कोई काम बिगड़ सकता है, परिश्रम सफल रहेगा, यात्रा हो सकती है।

मिथुन : सोशल कामों में व्यस्तता बनी रहेगी, यह सप्ताह भी प्राय: पहले जैसे ही रहेगा, व्यापारिक क्षेत्र में सुधार एवं लाभ भी आशा अनुसार होने लगेगा, संकट दूर होते दिखाई देगें, आर्थिक दशा भी सुधरेगी।

कर्क : इस सप्ताह को आपके लिए विशेष अच्छा नहीं कह सकते, विरोधी अपना दबाव बढ़ायेंगे या हानि भी पहुंचा सकते हैं, सतर्क रहें, सज्जन पुरुषों का परामर्श लाभप्रद रहेगा, हालात काबू में रहेगें, लाभ बढ़ेगा।

सिंह : इस सप्ताह में शुभ अशुभ मिश्रितफलों की प्राप्ति होती रहेगी, कुछ कामों में सुधार होगा और कोई महत्वपूर्ण काम बन जावेगा, लाभ अच्छा होने लगेगा, आर्थिककठिनाई पैदा होगी, या ऋण आदि के कामों में परेशानी।

कन्या : आर्थिक दृष्टिकोण से सप्ताह अच्छा रहेगा फिर भी आप धन की कमी महसूस करते रहेंगे, आपके काम पूरे हो जाएंगे रुकेंगे नहीं, अच्छे लोगों की संगत रहेगी, लाभ यथार्थ, परिवार से सुख भी रहेगा।

तुला : सप्ताह पर्याप्त अच्छा रहेगा, आरम्भ में कुछ उलझनें तो आयेंगी परन्तु बाद में अपने आप ही समाप्त होती जावेंगी, वातावरण पहले से सुधरेगा, कामकाज में रुचि बढ़ेगी, लाभ भी अच्छा होगा।

वृश्चिक : विभिन्न प्रकार के संघर्षों से युक्त होने पर भी यह सप्ताह अच्छा रहेगा, अच्छी आमदनी के साथ-साथ व्यय भी काफी होगा, मनोरंजन आदि पर व्यय एवं समय भी अच्छा बीतेगा, सेहत में बिगाड़।

धनु : यह सप्ताह भी प्राय: पहले जैसा ही रहेगा, सज्जन पुरुषों का परामर्श आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा, बड़ों की ओर से कुछ चिन्ता, कोई विशेष समाचार मिलेगा, यात्रा भी हो सकती है, भाग्य साथ देता रहेगा।

मकर : यात्रा अचानक और सफल भी रहेगी, सभा समाज के कामों में रुचि एवं मान प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी, कोई रुका हुआ काम बन जावेगा, विरोधी अधिक परन्तु मुंह की खायेंगे, नातेदारों से मेल जोल, लाभ बढ़ेगा।

कुम्भ : इन दिनों काफी संघर्ष करना पड़ेगा, परिश्रम अधिक और सफलता आशा से कम, आय यथार्थ परन्तु व्यय बढ़ेगा, ऋण आदि के कामों में परेशानी, फिर भी हालात आपके नियन्त्रण में ही रहेंगे, यात्रा सफल रहेगी।

मीन : किसी पुरानी समस्या से छुटकारा मिलेगा परन्तु कोई नई उलझन भी पैदा हो सकती है, धार्मिक कामों में रुचि, व्यय कुछ अधिक, मित्रों एवं अच्छे लोगों की संगत रहेगी, कामकाज ठीक चलेगा।

विजय भारद्वाज

'लैला मजनूं' की लैला को आज के फिल्म दर्शक दिलो-जान से चाहते हैं। यह लैला और कोई नहीं है इसका नाम है रंजीता। जी हाँ ! राबी कौर इनका असली नाम हैं।

२२ नवम्बर को इनका जन्म हुआ। सिख परिवार में जन्मी रंजीता खूबसूरत तो हैं ही लेकिन अभिनय में भी माहिर हैं।

रंजीता हालांकि पूना फिल्म एवं टेलीविजन इन्स्टीच्यूट की स्नातक हैं लेकिन पर्दे पर सर्वप्रथम इन्हें पेश करने का श्रेय निर्माता एच. एस. रवैल को जाता है जिन्होंने लैला की भूमिका के लिये रंजीता को चुना। यह इनके अभिनय और कला क्षमता का ही प्रभाव था कि इनकी पहली ही फिल्म रजत-जयन्ती प्रमाणित हुई।

मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त रंजीता बेहद गम्भीर व समझदार हैं। हर बात को गम्भीरता से लेती हैं और सोच समझ कर कदम आगे बढ़ाती हैं। बातचीत करने में मृदु भाषी रंजीता का कहना है—'पहले तोलो फिर बोलो।'

बात है भी सही। मुंह से निकली बात और कमान से निकला तीर वापस नहीं आ सकते।

'लैला मजनूं' के बाद इनकी दूसरी फिल्म प्रदर्शित हुई 'पति पत्नी और वो'। इस फिल्म ने भी अपार सफलता प्राप्त की। संजीव की प्रेमिका का रोल रंजीता ने बड़े प्यारे ढंग से निभाया। पूरी फिल्म में रंजीता के अभिनय के चर्चे रहे। फिल्म 'दामाद' इनकी एक और सफल प्रदर्शित फिल्म कुल मिला कर यह कहा जा सकता रंजीता की अब तक प्रदर्शित सभी हिट रहीं, चाहे उसमें हीरो भले ही क रहा हो।

पखेड़ा प्रोडक्शन कृत 'हमदम' पर रंजीता से मुलाकात हुई।

'आपकी आने वाली प्रमुख फिल् सी हैं। इनमें किस-किस प्रकार की भू आप निभा रही हैं ?'

'हमदम, डिक्टेटर, अखियों के झरो डाक्टर, जेलर, लाखन आदि कुछ मेरी वाली प्रमुख फिल्में हैं। इन सभी फि मैं विभिन्न प्रकार के रोल कर रही 'टाईप्ड' होना नहीं चाहती। किसी इमेज में कैद होना मुझे पसन्द नहीं रंजीता ने अपने हाथों से गालों पर पड़ी की लटों को पीछे सरकाते हुए कहा।

'पहली ही फिल्म लैला मजनूं सफलता के बाद आपको कोई नयापन म हुआ होगा ? कुछ नया तजुर्बा हासिल होगा ?' मैंने पूछा।

'लैला मजनूं में मैं लैला बनी फिल्म के प्रदर्शन के बाद मेरे पास मजनुओं के पत्र आये जो मुझे अपनी जि की लैला बनाना चाहते थे…' रंजी मुस्करा कर कहा।

'आपने इन सबको क्या जवाब दि

'अपनी एक-एक हस्ताक्षर युक्त उन्हें भिजवा दी…' रंजीता ने तपाक और उठ कर सैट की ओर चल दी उनका अगला शॉट फिल्माया जाना थ